कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
वर्षः११अंकः०१ अक्टूबर-११, इलाहाबाद
संरक्षक
बुद्धिसेन शर्मा
प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल
09935959412
संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया
सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011
कानाफुसीः 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु0 10/—
वार्षिकः रु0 110/—
पॉच वर्ष— रु0 500/—
आजीवन सदस्यः रु0 1100/—
संरक्षक सदस्यः रु0 5000/—

अंदर पढ़िए

हिन्दी प्रश्नों के चक्रव्यूह में.... 06

अंग्रेज, अंग्रेजी, अंग्रेजियत 08

हिन्दी के संवर्द्धन में भागीदार हरियाणा 10

हिन्दी की दशा, दिशा और भविष्य 12

भ्रष्टाचारः कारण और निवारण 15

स्थायी स्तम्भः

प्रेरक प्रसंग ०४
अपनी बात ०५
कविताएं- ०७,११,१७,२३
अहिन्दी भाषी रचनाकार- १२,२२
शख्सियत १४
हास्य-व्यंग्य १६
महिला रचनाकार २०
आध्यात्म २५
साहित्य समाचार- १७, १८, २१, २२, २४, २६, ३०
कहानीः साहब का कुत्तााा २७
पाठकों की पाती ३२
पुस्तक समीक्षा- ३३

प्रेरक प्रसंग

चिंतन मनन

मन तू इतना प्रवंचक है कि तुझे समझना सरल नही हैं. धीरे धीरे बहकाकर सीधे से सीधे, सरल से सरल को भी धोखे में डाल देता है.

+++++++++++

संसार चक्र में भटकने वाले बुद्धिजीवियों! सुख की कल्पना कितनी सत्य है जिसको पाने के लिए हम कितना प्रयत्न करते हैं. हम कितने नृशंस कार्य करते हैं इस परम प्रिय वस्तु की खोज में मृत्यु पर्यन्त भटकते रहते हैं.

+++++++++++

सुख की खोज में कितने बिहगंम उड़ गए, कितने इसकी जीवन खोज में हैं और कितने ऐसे हैं जिनको सोचने का मौका ही नहीं. कितनी इसकी खोज की गई, फिर भी इसकी तृप्ति, अतृप्ति का ही रूप लिए रहीं.

+++++++++++

धन, वैभव, ऐष्वर्य क्या सुख की गणना के अन्तर्गत है? दूसरों का षोषण, लूट, खसोट क्या सुख है? इन्द्रिय पिपासा की तृप्ति भी क्या कभी सम्भव है? नहीं, नहीं कदापि नहीं.

+++++++++++

समय पीछे की ओर कभी नहीं लौटता है.

+++++++++++

समय का नश्ट करना अपने भविष्य को बिगाड़ना है, अपनी अवनति करना है. एक क्षण का भी मूल्य समझो उसे व्यर्थ न नश्ट करों. जो समय का उपयोग करता है वही जीवन सार्थक बनता है.

+++++++++++

अनेक रुपता में एक रुपता का समन्वय न कर पाना ही दुःख, संघर्ष, ईर्ष्या, कलह का कारण बनता है. विधाता की इस अनोखी रचना में कितना विरोधाभास है, कितना आहलाद है. चेतन की यह विविधता उसके स्वभाव, कर्म, मन व बुद्धि में स्पष्ट दिखाई पड़ती है. विभेद के परिलक्षित होने का यही कारण है.

+++++++++++

हम किसी नवीन वस्तु को देखकर उसके जिज्ञासा तथा कौतूहल का अनुभव करते हैं. हम सदैव नवीनता चाहते है, प्राचीनता का महत्व कम देते है. युग परिवर्तनशील है. ऐसे ही प्राचीन संस्कृति का धीरे-धीरे लोप तथा नवीन संस्कृति का विकास हो रहा है.

++++++++++

मानव एक वातावरण में रहते रहते ऊब जाता है, उसे परिवर्तन की आवश्यकता होती है और आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है. के सिद्धात से वह नयापन लाने का प्रयास करता रहता है.

✍ **दाऊजी,**

अदाब अर्ज़ है

शिखर पहुंच कर शिखर जन, झेले विरथ कलंक।
चन्द्र-पूर्णिमा 'राजगुरु', लगे ग्रहण का पंक।।

रार न चाहे महत जन, रारी रार बढ़ाय।
गिरि कब बोले 'राजगुरु' पवन जाय टकराय।।

आपस रगढ़ा नशावान, कुल, समूह मिट जाय।
भिराबॉस का 'राजगुरु', रगड़ा आग नशाय।।

लघु लोचा परिवार का, करे गांव का नाश।
'राजगुरु' जंगल जले, आपस रगड़े बांस।।

ज्योति निहारे दिवाकर, जल पाताल समाय।
'राजगुरु' छोड़े नहीं, लोहू वश सुभाय।।

देव दिवाकर दिवस दुति, कोटर उघे उलूक।
सुजन करे क्या 'राजगुरु', दुजन सुहाये चूक।।

मुखिया मौसम सा मिले, धर्म, वर्ण, तज जात।
सबके आंगन 'राजगुरु', मेघ करे बरसात।।

हमल हिरासत हिस्त्र के, हमलावर उत्पत्ति।
विरथा आशा 'राजगुरु' पैदाइश सद्वृत्ति।।

✍ **आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर 'राजगुरु'**, जबलपुर, म.प्र.

अपनी बात

पढो मत..... ?

अगर अपने इलाहाबाद में सबसे सस्ती कोई चीज है तो वह है पढ़ा लिखा आदमी. देश के भविष्य बच्चों को पढ़ाने वाले अधिकांश निजी विद्यालयों में शिक्षकों को मिलते है ५०० से लेकर ५०००/रुपये प्रतिमाह. यानि २०रुपये से लेकर २०० रुपये प्रतिदिन. जबकि सरकार एक श्रमिक का न्यूनतम मजदूरी २०५ प्रतिदिन का निर्धारण किए हुए है. लेकिन इस देश की महानता है कि पढ़ा लिखा मजदूर, अनपढ़ मजदूर से भी कम मजदूरी पाता है और एहसान मुफ्त में लेना पड़ता है. शिक्षक तो एक नमूना है, कमोवेश यही दशा हर जगह है. चाहे वह सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/कंपनियों के संविदा कर्मी हो या प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियां हो. हस्ताक्षर करवाये जाते हैं किसी और दर पर मिलते हैं हस्ताक्षर दर की आधी से भी कम. वर्तमान सभी संविदा कर्मियों के लिए पी.एफ. इएसआई अनिवार्य कर दिया गया. प्रत्येक माह इसके नाम पर कटौती होती है, लेकिन कर्मी का पी.एफ./इएसआई फार्म ही नहीं भरा जाता अगर भरा जाता है तो भी जमा होते हैं निर्धारित मापदण्ड के २५-३०प्रतिशत. संविदा कर्मी मजदूर, कार्यालय सहायक, सुपरवाइजर आदि पदों पर कार्यरत कर्मचारी अपने दिमांग में अपने वेतन के हिसाब से आकड़े लगाता रहता है. लेकिन कभी वक्त वेवक्त जब उसे निकालता है तो पता चलता है कि उसके नाम का तो कोई खाता ही नहीं या तीन साल में , पांच साल में मात्र ५०००/ रुपये है। जबकि इस पर ८.५ प्रतिशत ब्याज भी मिलता है. ठेकेदार, कपंनी के अधिकारी से बात करो तो वह बोलता है-'साहबों को कमीशन देना पड़ता है.' साहब बोलते है-'ठेकेदार ने जमा नहीं किए होंगें, देखते है, उसको चिट्ठी लिखते हैं.' लेकिन साहब को चिट्ठी लिखते-लिखते दिन, महीने, साल गुजर जाते है. संविदा कर्मी साहब से उम्मीद की आश में जी हुजूरी करता रहता है. मगर परिणाम वहीं ढाक के तीन पात. साहब से बोलने के कारण ठेकेदार खुन्नस अलग खाने लगता है. श्रमिकों के हित के लिए केन्द्र व राज्य सरकार के अलग-अलग श्रम विभाग है. इनका काम है श्रमिकों/संविदा कर्मियों की हितों की रक्षा करना है. मगर इस विभाग के निरीक्षक/अधिकारी संविदा कर्मी की रक्षा कम, अपने लिए धन की व्यवस्था ज्यादे करने में लगे रहते हैं. ये जब निरीक्षण पर आते हैं तो इनके तेवर इतने तीखे होते हैं, कि बस लगता है कि श्रमिकों/संविदाकर्मियों के सबसे बड़े हितैशी. इनके आने पर ठेकेदार द्वारा/अधिकारियों द्वारा या तो अधिकांश को किनारे कर दिया जाता है अगर कुछ सामने आते है तो भी धमकी देकर उनसे न्यूनतम मजदूरी पाने की बात कही जाती है. अगर इन श्रम हितैशी भ्रष्ट निरीक्षकों को किसी श्रमिक ने वास्तविक स्थिति से अवगत करा दिया तो निरीक्षक की तो बल्ले-बल्ले हो जाती है लेकिन श्रमिक की आफत. श्रमिकों से लिए डाटा के आधार पर ये निरीक्षक ठेकेदार से पैसे ऐंठते हैं, जब पैसे मिल जाते हैं तो ठेकेदार को उक्त श्रमिकों के नाम बता दिये जाते हैं और ठेकेदार उन श्रमिकों को निकालकर बाहर कर देते हैं. यह श्रम विभाग की हकीकत. उस समय निकाले गये श्रमिकों को पछताने के सिवा कुछ नहीं बचता. उनका साथ देने के लिए न तो निरीक्षक होते है, न अधिकारी और न ही स्वयं के साथी श्रमिक. ऐसी दुर्घटनाओं के शिकार अधिकांश कुछ पढ़े-लिखे संविदा कर्मी ज्यादे होते है क्योंकि उन्हें पढ़ा लिखा होने के कारण उन्हें अपने वेतन, पी.एफ., इएसआई, अधिकार की जानकारी जो होती है. लेकिन अनपढ़ मजदूर इस तरह की घटना से बच निकलते हैं. इसीलिए तो कहता हूं तो पढ़ो मत मेरे भाई यह भारत महान देश है. यहां अगूठा छाप राज करता है और पढ़ा लिखा व्यक्ति इनकी गुलामी. इस देश में भारत की सर्वोच्च सरकारी सेवा आई.ए.एस. भी इन अगूंठा टेक लोगों के आगे नतमस्तक रहते है, तो अन्य की बात ही छोड़िए.

बस आज से ही पढ़ना बंद कर दीजिए, बच्चों को पढ़ाना, पढ़ाई में खर्च होने वाले एक लम्बे इन्वेस्टमेंट को सुरक्षित रख कर अपने बच्चे को उन पैसों से गुंडागर्दी, ठेकेदारी, नेतागिरी कराने की ट्रेनिंग दिलवाइए. ये एक रुपये का कम से कम एक हजार देंगें. पढा-लिखानें में अगर आप एक रुपये खर्च करेंगे तो आपको पच्चीस पैसे भी नहीं मिलने की उम्मीद होगी.

आगे आपकी मर्जी, आप खुद ही समझदार है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मुद्दा

हिन्दी प्रश्नों के चक्रव्यूह में

हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है. देश का कोई भी सच्चा प्रेमी हिन्दी का तिरस्कार नहीं कर सकता. दुनिया से कह दो गांधी अंग्रेजी नहीं जानता.:

मोहन दास करम चंद गांधी

दर्शन सिंह रावत,
उदयपुर, राजस्थान

१५ अगस्त, १९४७ को जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब बी.बी.सी लंदन ने महात्मा गांधी के विश्व के नाम एक संदेश देने के लिए कहा था. उस समय गांधी जी ने कहा था-'हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है. देश का कोई भी सच्चा प्रेमी हिन्दी का तिरस्कार नहीं कर सकता. दुनिया से कह दो गांधी अंग्रेजी नहीं जानता.'

यह था बापू का स्वाभिमान, स्वेदशाभिमान. बापू का संदेश था कि देश की भाषा अब अंग्रेजी न होकर, केवल हिन्दी होगी. अंग्रेजी का स्थान मात्र एक विदेशी भाषी के रूप में रहेगा.

हिन्दी का प्रचार प्रसार संतो, सूफियों, कवियों एवं राष्ट्रीय नेताओं ने अपने विचार आम जन तक पहुंचाने के लिए अपनी इच्छा से हिन्दी का सहारा लिया था. मुस्लिम शासन काल में भी जब फारसी राजभाषा थी, आम लोगों की भाषा हिन्दी ही थी. यह पूरे देश की हजार वर्षो से जन सम्पर्क की भाषा रही हैं.

हिन्दी सभी विषयों को अभिव्यक्त कर सकने की शक्ति रखती है. संविधान निर्मात्री सभा ने १४ सितम्बर १९४९ को इसे संघ की राजभाषा घोषित कर दिया था, परन्तु इस अनुच्छेद के लागू होने के दिनांक से ही इसे १५ वर्ष का बनवास दे दिया गया, जो ६० वर्ष बाद भी समाप्त नहीं हुआ है.

आज भी हिन्दी प्रश्नों के चक्रव्यूह में फंसी हुई है और कोई भी अर्जुन इस चक्रव्यूह को तोड़ कर इसे आजाद करना नहीं चाहता. प्रायः जो प्रश्न किये जाते हैं, वह इस प्रकार हैः-

०१ हिन्दी ही राजभाषा क्यों:
भारत की जनतांत्रिक शासन प्रणाली तभी सार्थक और सफल हो सकती है जब इसे जन का समर्थन प्राप्त हो. भारत की अधिकांश जनता की भाषा हिन्दी ही है और वे सदियों से इसे प्रयोग में ला रहे हैं. कोई भी स्वाभिमानी राष्ट्र विदेशी भाषा को राजभाषा का दर्जा नहीं देना चाहेगा. स्वाधीनता का अर्थ जातीय उत्पीड़न से मुक्ति है. भाषाई स्वतंत्रता राष्ट्रीय आन्दोलन के समय सभी नेताओं ने एकमत होकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया था व इस प्रश्न पर संविधान सभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर दिया था.

२. हिन्दी थोपी नहीं जायेगी-
हिन्दी तो प्रेम की भाषा है. यह हिन्दुस्तानियों की मातृ भाषा है और अधिकांश लेखकों की भाषा भी हिन्दी ही रही है. दक्षिण के मदुरै, श्रीरंग, कांची, रामेश्वरम्, तिरुपति और गुरूव्यूमर जैसे तीर्थो के पंडे, पंडित, व्यापारी, दुकानदार सभी हिन्दी जानते हैं. केरल में हिन्दी को गोसाई भाषा कहा जाता है. हिन्दी के विरोधकाल ने हिन्दी प्रचार सभा के कार्यालय व हिन्दी सेवी संस्थाओं पर आक्रमण नहीं किया है. आज दक्षिण के जितने लोग अंग्रेजी जानते हैं, उससे १० गुणा ज्यादा हिन्दी जानते हैं.

इस देश पर तो अंग्रेजी थोपी गई थी व स्वतंत्रता के ६० वर्ष बाद भी थोपी जा रही है, जिसका विरोध किया जाना जरुरी हैं.

३. देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं के लिए अनुपयुक्त है-
अंग्रेजी समर्थक उपरोक्त बात बड़े जोर शोर से कहते है, जबकि वास्तव में हिन्दी उच्चारण तथा ध्वनि की दृष्टि से एक वैज्ञानिक भाषा है, इसमें जो बोला जाता है, वहीं लिखा जाता हैं. हिन्दी वर्णमाला में स्वरों तथा व्यंजनों को क्रम उच्चारण के अनुरुप रखा गया हैं.

अंग्रेजी सारी दुनिया में ध्वनि-विहीन भाषा के रूप में जानी जानी है. अंग्रेजी की वर्तनी त्रुटिपूर्ण है. इसमें जैसा लिखा जाता है, वैसा पढ़ा नहीं जाता. कुछ शब्द चुप 'साईलेंस' है जैसे 'नौकिंग', 'नाईफ' में 'के' अक्षर मौन है.

४.हिन्दी में शब्दों की कमी है-
अंग्रेजी भाषा में ऐसे कई शब्द नही है जो हिन्दी वर्णमाला में है यथा ण, त्र, श, ऋ, ड़ आदि. इसी तरह यहां पर सफेद कमल को पुडरीक, नील कमल को इंदीवर, लाल कमल को कोकनद्, कीचड़ में उगने वाले कमल को पंकज, तालाब के स्वच्छ जल में उगने वाले कमल को सरोज कहते हैं.

अंग्रेजी में ३ लाख शब्द है जबकि हिन्दी में सात लाख शब्द है और नये-नये शब्द गढ़े जा रहे है. संस्कृत के समास के आधार पर हिन्दी में शब्द गढ़ने की अपार क्षमता है.

५. अंग्रेजी राष्ट्रभाषा है-
भारतीय संविधान की ८वीं अनुसूची में भारत की २२ भाषाओं को राष्ट्रभाषा

का दर्जा दिया गया है, यह संविधान सम्मत भाषा भी नहीं हैं.

अंग्रेजी तो विदेशी शासकों की भाषा है, यह शोषण की भाषा है. अतः यह राष्ट्रभाषा न थी और न ही हो सकती है, हिन्दी स्वतंत्रता आन्दोलन के समय राष्ट्रभाषा घोषित कर दी गई थी व संविधान द्वारा इसे संघ की राजभाषा बना दिया गया है.

६.हिन्दी प्रशासन की भाषा बनने योग्य नहीं–
इंग्लैंड निवासी फ्रेडरिक पिन्कांट (१८२६-१८६६) ने १८७८-७६ में लिखा था कि उन्होंने २० वर्ष पूर्व सरकार पर दबाव डाला कि भारत आने वाले अंग्रेजी सिविल अधिकारियों को अनिवार्य रूप से हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था की जाये. यह हिन्दी शिक्षण अनिवार्य किया गया, इस संबंध में इंडिया ऑफिस लंदन को पत्र क्रमांक ६७५-८१ जे.पी.दिनांक १२.०८.१८८१ आदेश सेक्रेटरी सिविल सर्विस कमीशन को भेजा गया.

इन ब्रिटिश आई.सी.एस अधिकारियों को कलकत्ता के फोर्ड विलियम कॉलेज में भारतीय भाषाएं विशेषकर हिन्दी पढ़ाई जाती थी न उन्हें हिन्दी की परीक्षा अनिवार्य रूप से पास करनी पड़ती थी. आज भी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को अनिवार्यतता हिन्दी पढ़ाई जाती है व इस परीक्षा को पास करना उनके लिए जरुरी है.

मुस्लिम शासन काल व हिन्दु राजाओं के यहां पर हिन्दी राजभाषा थी. राजस्थान के राजाओं को महर्षि दयानन्द ने यही संदेश दिया था कि शासन स्वभाषा में किया जाये. उस समय के परवाने, पट्टे व आदेश हिन्दी में निकलते थे. अतः हिन्दी प्रशासन की भाषा के योग्य थी व है, इसके विरुद्ध बेकार में ही षडयन्त्र किया जा रहा है.

७. हिन्दी एकमत से राजभाषा बनी–यह असत्य बात कईबार कही जाती है, कि हिन्दी एकमत से राजभाषा बनी. हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव तमिल भाषी श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने रखा व समर्थन शंकर राव देव ने किया था. यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हो गया था. इस घटना बाबत् हिन्दी में लिखा गया कि सभा ने एकमत होकर हिन्दी को राजभाषा बनाया था. इस घटना के बारे में कई लेखकों ने बाद में लिख दिया कि संविधान निर्मात्री सभा में जब इस विषय पर वोटिंग हुई तब आधे सदस्य पक्ष व आधे विपक्ष में थे, अतः सभापति के एक मत द्वारा हिन्दी विजयी रही. इसे सभी के वोटों से राजभाषा बनाया गया.

८. हिन्दी में वैज्ञानिक विषय की पुस्तकें नहीं है–वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी वैज्ञानिक और तकनीक प्रकाशन निदेशिका' ने हजारों पुस्तकों की सूची दी हैं. पांच हिन्दी राज्यों की 'हिन्दी ग्रन्थ अकादमियों' द्वारा विश्व विद्यालय स्तर की हजारों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. हिन्दी में कई वैज्ञानिक पत्रिकाएं कई सालों से छप रही हैं.

अंग्रेजी को ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीक विषयों की भाषा के रूप में प्रचारित किया गया, लेकिन यह सत्य नहीं है. रूस की सारी सामरिक तकनीक अंग्रेजी के बजाय रूसी में हैं. रूस की सारी सामरिक विज्ञान रूसी पुस्तकों के बिना अधूरा है, अन्तरिक्ष विज्ञान रूसी पुस्तकों के बिना अधूरा है, जापान की इलेक्ट्रानिक अर्थव्यवस्था में अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है. जर्मनी को आर्थिक महाशक्ति बनाने में उसकी अपनी भाषा जर्मन ने ही मदद की है. हमें भी सारा काम अपनी भाषा में करना चाहिए.

हिन्दी को अविकसित व पिछड़ा कह कर नकारा जाता है, इसका वैज्ञानिक परीक्षण किये बिना ही यह नारा बुलन्द किया जाता है, जो कि उचित नहीं हैं.

हिन्दी कठिन भाषा नहीं है. यह स्वदेशी भाषा है. हमें हमारा सारा शिक्षण, प्रशिक्षण व शोध कार्य स्वभाषा में करना चाहिए, तभी हम विकास मार्ग पर अग्रसर होते रहेंगें. हमें जनहित में मन, वचन और कर्म से राष्ट्रभाषा को अपनाना चाहिए, इसी संकल्प से हमारी समस्याओं को हल हो सकेगा.

० जापान की इलेक्ट्रानिक अर्थव्यवस्था में अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है.
० जर्मनी को आर्थिक महाशक्ति बनाने में उसकी अपनी भाषा जर्मन ने ही मदद की है.
० रूस की सारी सामरिक तकनीक अंग्रेजी के बजाय रूसी में हैं.

एस.एम.एस. रचना

दर दर भटके है मेहमान की तरह,
हर कोई मिलता है अनजान की तरह,
इस दुनिया से खुशी की आस क्या करें, लोग गम भी देते हैं एहसान की तरह

राम लंका जीत कर वापिस आ रहे थे,
सुर्पखा बोली-प्रभु मेरा क्या होगा?
राम-कलयुग में अयोध्या पर राज करोगी,
पर विवाह फिर नहीं होगा.

ule gk**s**k "मायावती"
मो० ०६३०७७७६२३०

अंग्रेज, अंग्रेजी, अंग्रेजियत

✍हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ.प्र.

मैं ऋषिकेश एक कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए गया था. जहां बहुत से विद्वान आये थे और उन्हीं में से एक सज्जन जो कलकत्ता से पधारे थे, उन्होंने हमारी संस्कृति के संदर्भ में कहा कि इसको बदलने का पूरा प्रयास अंग्रेजी शासन में किया गया. उन्होंने अपने संभाषण में एक पत्र का उल्लेख किया, जो किसी अंग्रेज अधिकारी द्वारा भारत से ब्रिटिश शासकों को लिखा गया था, जिसका भावार्थ था- 'मैंने संपूर्ण भारत का दौरा किया एवं मैंने एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जो भिखारी हो, जो चोर हो. इस देश में मैंने ऐसी दौलत देखी, ऐसे उच्च नैतिक मूल्य, ऐसे योग्य लोग कि मैं नहीं मानता कि हम कभी भी इस देश को जीत पाएंगे जब तक कि हम इस देश की रीढ़ को ही न तोड़ दें जो उसकी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत है. इसलिए मैं प्रस्ताव करता हूं कि हम उसकी पुरानी और प्राचीन शिक्षा पद्धति, उसकी संस्कृति को बदल दें, चूंकि यदि भारतीय यह सोचे कि जो कुछ विदेशी या अंग्रेजी है वह अच्छा है और उनके स्वयं से महान है, वे अपना स्वाभिमान, अपनी स्थानीय संस्कृति खो देंगे एवं वे वह बन जाएंगे जैसा हम उन्हें चाहते हैं, एक वास्तविक गुलाम राष्ट्र.'

तभी मेरे मन में यह बात आयी कि जो कुछ हम देख रहे हैं. वह वास्तविकता है और एक सुनियोजित षडयंत्र है. जिससे छुटकारा पाना बड़ा मुश्किल है क्योंकि परोक्ष अंग्रेज पुत्र अभी हमारे देश में सक्रिय है, जिनकी संवेदना, राष्ट्रभक्ति, देशप्रेम, मातृभूमि का गौरव आदि नष्ट हो चुके हैं.

कभी वह जख्म टीसने लगते हैं, जो अंग्रेजी शासन में हमें लगे. हमारे देशवासियों को लगे, हमारी भारतमाता ने अनुभव किये. कभी भी याद आ जाता है, जालियावाला बाग, मुगल शहजादों के कटे हुए सर और मंगल पांडे को दी गयी सजा. यों तो अनगिनत शहीदों को, क्रांतिकारियों को अंग्रेजी शासन में फांसी दे दी गयी. लेकिन चन्द्रशेखर आजाद, अशफाकउल्ला खां, बिस्मिल, सावरकर और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भुलाए नहीं भूलते. दुर्गा भाभी, बेगम हजरत महल और भी बहुत से व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपना बलिदान देकर भारतवर्ष को आजादी दिलायी. आजादी मुफ्त में नहीं मिली लाखों लोगों ने बलिदान दिया. कुछ युद्ध में मरे, कुछ को फांसी दी गयी और कुछ जेलों में सड़ गये तब जाकर भारतवर्ष को आजादी मिली. लेकिन क्रांति को जिस प्रकार से दबाया गया, क्रांतिकारियों को जिस प्रकार से मिटाया गया वह इतना दुखद और क्रूरतापूर्ण था कि भुलाए नहीं भूलता. यह तो सच है कि कोई भी किसी के घर पर अधिक दिन तक काबिज नहीं रह सकता. लेकिन अगर कब्जा करने वाला घरवालों को ही मारना शुरु कर दे तो इसे क्रूरता के अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता और भारतवर्ष ने यह क्रूरता झेली है. भारतवर्ष के वीर क्रांतिकारी हंसते-हंसते फांसी पर झूल गये और भारतवर्ष ने यह क्रूरता झेली है. भारतवर्ष के वीर क्रांतिकारी हंसते-हंसते फांसी पर झूल गये और भारतवर्ष की आजादी के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया. हम कृतघ्न है यदि हम इसको याद नहीं करते. यदि हमें यह यादें नहीं टीसती या हमें उन क्रांतिकारियों का स्मरण नहीं होता, जो फांसी पर चढ़ा दिये गये, जो जलियावाला बाग में मार दिये गये.

ऐसा नहीं कि अंग्रेजी शासन ने हमें यही कुछ दिया, बल्कि एक बोझ की तरह जीवन भर के लिए अंग्रेजी भाषा को हम पर लाद गये. हम आज आजाद होते हुए भी भाषा के गुलाम हैं. अपनी हिन्दी को हम वो स्थान नहीं दे पा रहे हैं, जो राष्ट्रभाषा के रूप में मिलना चाहिए था. यह एक कूटनीतिक चाल थी, जिसके कारण जाते-जाते भी अंग्रेजी शासन हम पर वह कुछ थोप गया, जो हमें याद दिलाता रहेगा कि हम कभी गुलाम थे और आज भी भाषायी गुलाम हैं. ऐसे कई देश है, जिन्होंने विलुप्त होती हुई अपनी राष्ट्रभाषा को पुर्नजीवित कर लिया, किन्तु हम अपनी शाश्वत हिन्दी भाषा को भी राष्ट्रभाषा का स्थान नहीं दे पा रहे हैं, क्योंकि हम आज भी अंग्रेजी शासन की इस कूटनीतिक चाल से बाहर नहीं निकल सके हैं.

भाषा ही नहीं अग्रेजी शासन जाते-जाते हमें अपने भेष और परिवेश भी दे गये. हम आज पैंट, कमीज, कोट, टाई पहनकर अपने आप को गौरावान्वित अनुभव करते हैं, जबकि यह हमारी पोषाक नहीं है. हम आज तक अपनी पोषाक सुनिश्चित नहीं कर सके और अंग्रेजी पोषाक को पहनकर ही जी रहे हैं. संसद के अन्दर सांसद भी अपनी परंपरागत पोषाक न पहनकर अंग्रेजी कोट, पैंट, टाई पहनकर आते हैं. किसी भी देश की सभ्यता को नष्ट करने के लिए जो बातें आवश्यक है. वह सभी हम पर थोप दी गयी और हम इतने महान हैं कि अपने आपको इन थोपे हुए सन्दर्भो से आजाद नहीं कर पा रहे हैं. भाषा और भेष दोनों पूरी तरह अंग्रेजियत के रंग में रंगे हुए हैं. जीन्स, टॉपलैस,

ब्लाउज यह सभी कुछ अंग्रेजों की ही देन है, जिसे पहनकर आज लड़किया/युवतियां अर्द्धनग्न अवस्था में घूमती हैं.

हमारी भोजन पद्धति भी पूरी तरह अंग्रेजियत के कब्जे में हैं. चौके में बैठकर खाने का रिवाज समाप्त हो चुका है. हाथ-पैर धोकर खाने की पद्धति प्रचलन में आ गयी है. एक ही प्लेट में सारी सब्जी, रायता डालकर जानवरों जैसी सानी बनाकर खाना अंग्रेजियत की ही देन है, पहले थाल में अलग-अलग कटोरियों में वस्तुएं परोसी जाती थी और हम खाते थे प्रत्येक वस्तु का स्वाद अलग होता था. अब जब प्लेट में सभी चीजें मिल जाती है तो स्वाद का पता हीं नहीं चलता. खाने से पहले पीने की परंपरा भी अंग्रेजी शासन के द्वारा ही हमें मिली है और पीने के बाद यह पता ही नहीं चलता कि हम क्या खा रहे हैं?

हमारे व्यवहार और आचरण पर भी पूरी तरह से अंग्रेजियता की छाप बरकरार है. अविवाहित स्त्री-पुरुषों का साथ-साथ रहना अंग्रेजी शासन की ही देन है. वरना पुरातन काल में ऐसा कोई सोच भी नहीं सकता था. असभ्य युग के समान अविवाहित स्त्री-पुरुषों का साथ-साथ रहना, समाज पर एक कलंक ही है. क्योंकि मन भरने पर अलग-अलग हुए स्त्री-पुरुषों के बच्चे अपने बाप को और मॉ को ही ढूंढते रहते हैं. उनको परिवार नाम की कोई शरण स्थली प्राप्त नहीं होती. फलस्वरुप ऐसे बच्चे मार्ग से भटककर आतंकवादी हो जाते हैं और समाज से कट जाते है. जाते-जाते भारतवर्ष को नासूर की तरह से और भी कई उपहार दिये गये हैं जैसे कि फास्ट फूड, चाय तथा शीतल पेय आदि.

आजादी के साथ-साथ भारतवर्ष को दो हिस्सों में बांट दिया गया यह भी एक कूटनीतिक चाल थी कि जो हमें भारतवर्ष से भगा रहे हैं, वह कभी चैन से न बैठ सके और बंटवारे के साथ-साथ आपसी नफरत और फूट इस कदर भर दी गयी कि सांस से भी नफरत की बदबू आती है. पाकिस्तान जैसे शत्रु का जन्म अंग्रेजी शासन की ही देन हैं क्योंकि जाते-जाते नासूर के रूप में पाकिस्तान को भारतवर्ष के सीने पर उत्पन्न कर देना एक प्रकार से बदला लेने के समान था. हम उस समय इस अधूरी आजादी के चक्कर में इतने डूबे हुए थे कि इस सब पर ध्यान नहीं दे सके. हमारे अपने स्वार्थ हमारे शत्रु बन गये. आज भी भारतवर्ष में राष्ट्रपति कई बार मुस्लिम व्यक्तित्व हो चुके हैं. अगर आजादी के समय हमने छह महीने की शेष आयु वाले श्री जिन्ना को प्रधानमंत्री मान लिया होता तो पाकिस्तान न बनता और भारतवर्ष का एक ऐसा शत्रु उत्पन्न न होता, जो न स्वयं चैन से रहता है और न चैन से रहने देता है.

हमने धर्मान्तरण भी झेला है. अंग्रेजी स्कूलों को भी बर्दाश्त किया है, अंग्रेजी पोषाक को भी बर्दाश्त किया है तथा अंग्रेजी जीवन शैली को भी झेल रहे हैं. इन सबसे निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आता. हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं. हम अनुशासनबद्ध नहीं रहना चाहते, इसीलिए जीवन में पाश्चात्य संस्कृति की ओर दौड़ रहे हैं.

जहां हमें अंग्रेजी शासन द्वारा बहुत से जख्म, बहुत सी चोटें प्रदान की गयी वहीं सबसे बड़ा दीमक की तरह देश को चाटने वाला खेल क्रिकेट भी हमें सौगात में दिया गया, क्रिकेट एक ऐसा खेल है जो देश की प्रगति में बहुत बाधक है. यदि हम देश की तरक्की की बात सोंचे तो क्रिकेट से कोई तरक्की होने वाली नहीं है. लगभग १०० व्यक्तियों की जेब में क्रिकेट के माध्यम से करोड़ो रुपये पहुंच जाते हैं. यदि हम क्षमता की तरह से देखे तो कार्यालयों में कार्यक्षमता घट रही है. जिस दिन क्रिकेट का खेल होता है उस दिन कार्यालयों में कोई काम नहीं होता.

कार्यालय प्रमुख या तो उस दिन बिना छुट्टी लिये घर पर मैंच देखते है अथवा कार्यालय में ही टी.वी.मंगा लिया जाता है. यदि हम खुशहाली की बात सोचे तो क्रिकेट के खेल से देश को कोई खुशहाली प्राप्त नहीं होती. बल्कि देश के काम आने वाला पैसा एक प्रकार से क्रिकेट जैसे खेल पर बरबाद हो जाता है. आज किसी भी महानगर में चले जाइए वहां पर सड़के टूटी-फूटी मिलेंगी, नालियां कूड़े से अटी हुई मिलेंगी, क्योंकि यह बारहमासी क्रिकेट का खेल न कुछ करने देता है, न कुछ सोचने देता है. हम बड़े खुश होते हैं जब क्रिकेट में कभी-कभी कोई मैच जीत जाते हैं किन्तु हमें ध्यान नहीं आता अपने उन जाबांज सिपाहियों का जो सरदी, गरमी और बरसात में सीमाओं पर पहरा देते हैं. क्रिकेट के खिलाड़ियों को जो धन-दौलत मिलती है, वह हमारे जांबाज सैनिकों को नहीं प्राप्त होती, जो देश की सुरक्षा में लगे रहते हैं. जो पैसा क्रिकेट जैसे नामुराद खेल पर खर्च होता है वह यदि देश को संवारने और सुधारने में लगाया जाए तो देश की उन्नति भी हो सकती है और देश खुशहाल भी हो सकता है. आज तो यह आलम है कि हर खेत में क्रिकेट के मैदान बन गये हैं, गली-मुहल्लों में लड़के क्रिकेट खेलते दिखायी देते हैं. दीमक पूरी तरह से फैलती जा रही है. देश का युवा वर्ग इस खेल के चक्कर में अपनी प्रतिभाओं को नष्ट कर रहा है. प्रतीक्षा है ऐसे शासन की जो देश को अंग्रेज, अंग्रेजी और अंग्रेजियत से मुक्त कर सकें.

हिन्दी के संवर्द्धन में भागीदार हरियाणा

✍रामशरण युयुत्सु,जीन्द, हरियाणा

हरियाणा की सरस्वती-सिंचित भूमि साहित्यिक दृष्टि से चिर-उर्वरा है. इस भूमि को वेद, महाभारत, पुराण, गीता आदि पवित्र ग्रन्थों की रचनास्थली होने का गौरव प्राप्त है. चार में से तीन वेद इसी धरा पर लिखे गए और सृजन के मामलों में आज भी उर्वरा है हरियाणा की धरती. इसने महाराज हर्ष और बाण भट्‍ट जैसे महान सरस्वती-पुत्रों को अपनी गोद में खिलाया है. महाकवि सूरदास की काव्य-कला भी इसी पवित्र भूमि पर पुष्पित-सुषमित हुई है.

हरियाणा में रचित हिन्दी-साहित्य का सर्वप्रथम परिचय 'प्रियदर्शिका', 'रत्नावली' और 'नागानाद' के प्रणेता हर्षवर्द्धन से होता है. जहां उन्होंनें स्वयं कालजयी साहित्य का सृजन किया, वहीं साहित्यकारों को भी प्रेरित-प्रोत्साहित किया. 'कादम्बरी', 'हर्षचरित', और 'पार्वती परिणय' का प्रणेता बाणभट्‍ट इसी राज्य का निवासी और हर्षवर्द्धन का दरबारी कवि था. 'मयूर शतक', 'सूर्य शतक' और 'मातंग दिवाकर' का रचयिता मयूर भी यहीं का रहने वाला था. प्रतिष्ठित नाटककार धावक भी हर्ष की राजसभा का सदस्य था. इसी सभा के एक और सदस्य गुणप्रभ द्वारा रचित 'तत्व संदेश शास्त्र' अपने समय की प्रसिद्ध कृति है. बाणभट्‍ट ने अपने 'हर्ष चरित' में हरियाणा के पुष्पदन्त-कृत 'महापुराण' कातो उल्लेख किया ही है, यहां के वायु-विकार (प्राकृति-कवि) तथा वेणी भारत (लोक भाषा-कवि) की भी चर्चा की है. गौरव का विषय है कि हिन्दी-साहित्य के शुभारंभ की पूर्व-संध्या तक हरियाणा में साहित्य-सृजन की एक सुदीर्घ समृद्ध परम्परा विद्यमान थी.'

हिन्दी की श्री वृद्धि में भागीदार हरियाणा साहित्य भी उतना ही पुराना है, जितना गांव और मनुष्य का इतिहास. यहां अधिकाश साहित्य गीतमय है, जिसकी भाषा हिन्दी खड़ी बोली होते हुए भी भाव भरी हैं. यह साहित्य में प्रेम, बलिदान, वीरता, धर्म और भक्ति का संदेश देता रहता है.

डॉ० लालचन्द गुप्त 'मंगल' के अनुसार-'हिन्दी में साहित्य-सृजन का श्रीगणेश हरियाणा से ही हुआ है. सवंत १०१५ के अप्रभंश के अंतिम और पुरानी हिन्दी के प्रथम कवि पुष्पदंत रोहतक के निवासी थे. श्री अगरचन्द नाहटा ने श्रीधर को हिन्दी का प्रथम कवि माना है. चार तीर्थकरों (चन्द्रप्रभ, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ, वर्द्धमान महावीर) पर चार चरित काव्य लिखने वाले श्री धर हरियाणा के निवासी थे.

हरियाणा में लेखन का एक वैशिष्ट्य यह भी रहा है कि यहां के लेखक कभी सरकारी संरक्षण का मोहताज नहीं रहा. हिन्दी की श्रीवृद्धि को लक्ष्य करके यहां के लगभग सभी प्रमुख शहरों में साहित्यिक संस्थाएं सक्रिय हैं और जहां संस्थाएं नहीं है, वहां लेखक अपने आप में संस्था बन चुका है. अनेक ऐसे हस्ताक्षर है, जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर समकालीन लेखन को प्रभावित किया है, लेकिन कष्टदायक विषय यह भी है कि सरकारी तंत्र में ऐसे महान हस्ताक्षरों को उस तर्ज पर नहीं संभाला जिस तर्ज पर मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और बिहार की सरकारों ने संभाला हैं.

हर वर्ष हरियाणा का हर विधा में काफी साहित्य हरियाणा अकादमी, पंचकूला के सहायतानुदान से भी प्रकाशित होता है. इसके अतिरिक्त गद्य-पद्य, जीवनी और यात्रावृत, उपन्यास, लघुकथा, कहानी, समीक्षा, बाल-साहित्य विपुल मात्रा में प्रकाशित हुआ है. इस प्रकाशित साहित्य की सूची को, इस लेख का अधिक विस्तार ना हो इसलिए, यहां उल्लेखित करना संभव नहीं हैं.

हिन्दी के विद्वान और आलोचक प्रो०लालचन्द गुप्त मंगल द्वारा सम्पादित 'हरियाणा का हिन्दी साहित्य' अकादमी का विश्वविद्यालय स्तरीय एक हजार वर्षो का प्रवृत्यात्मक इतिहास पहली बार हमारे सामने उजागर हुआ है. इसी श्रृंखला में एक महत् सारस्वत अनुष्ठान के रुप में डॉ० मंगल द्वारा ही सम्पादित 'हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार' नामक ग्रन्थ प्रस्तुत किया गया हैं. डॉ. आर.बी.लांग्यान कृत 'दलितों के मसीहाः डॉ० भीमराव अंबेडकर' एक महत्वपूर्ण जीवनी है, जो अपने युग के कई विचारोत्तेजक सवालों के समाधान भी प्रस्तुत करती है. राज्यस्तरीय साहित्यिक संस्था 'त्रिवेणी भिवानी ने यहां के कवियों का वृहत काव्य-संकलन 'बांगर-भूमि' प्रकाशित करके एक कृतिमान बनाया है. यह काव्य संकलन हरियाणा प्रांत ही नहीं देश भर में मील का पत्थर साबित होगा.

हरियाणा में हिन्दी साहित्य के प्रकाशकों में 'श्री अंगिरा शोध संस्थान' का नाम भी अग्रिम पंक्ति में हैं. रामशरण युयुत्सु के निर्देशन एवं सम्पादन में संस्थान ने वैद्य धनराम ग्रन्थ-माला के अन्तर्गत दो ग्रन्थ (भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं सभ्यता लेख संग्रह तथा यायावर कच्छ में यात्रावृत्त) का प्रकाशन, वैद्य धनराम स्मृति-माला के अन्तर्गत १७ तथा अन्य श्रेणी में ८ पुस्तकों का प्रकाशन किया है. विश्वविद्यालय स्तर के प्रकाशनों में डॉ० दामोदर वासिष्ठ

द्वारा सम्पादित शोध-ग्रन्थ 'पण्डित शादीराम ग्रन्थावली' संस्थान की विशेष उल्लेखनीय कृति हैं. हरियाणा साहित्य जगत के लिए यह श्रेष्ठतर उपलब्धि है.

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, गुरुजम्भेश्वर विश्वविद्यालय तथा चौ० देवी लाल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागों द्वारा की गई सेवाओं के अतिरिक्त राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल ने तकनीकी प्राद्यौगिकी शब्दावली तैयार करके हिन्दी की लाभकारी सेवा की हैं.

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)हरियाणा ने भी अपने लेखकों को उनकी पुस्तकों के प्रकाशनार्थ प्रतिवर्ष आर्थिक सहायतानुदान देने की ऐतिहासिक पहल गत वर्षो से की है.

यहा रचित साहित्य के शोधार्थी डॉ० रामनिवास 'मानव' ने 'हरियाणवी बोली तथा उसके साहित्य' एक शोधपरक कृति का पिछले दिनों ही प्रकाशन किया है. डॉ० सुभाष चन्द्र द्वारा रचित पानीपत निवासी हाली पर हिन्दी शैली में लिखी पुस्तक 'अल्ताफ हुसैन हाली' एक बुलन्द दर्जे की पुस्तक है. इसे हरियाणा साहित्य अकादमी ने प्रकाशित कर एक सराहनीय कार्य किया है.

यहां के हिन्दी सेवा के निमित साहित्यिक वातावरण के निर्माण में हरियाणा साहित्य अकादमी की पत्रिका 'हरिगंधा', आधार प्रकाशन की 'पल प्रतिपल', प्रयास ट्रस्ट रोहतक की 'मसिकागद', ओम साहित्य कुटीर, जीन्द की 'त्रिवाहिनी', कहानी लेखन महाविद्यालय अम्बाला छावनी की 'शुभतारिका', श्री अंगिरा शोध संस्थान की 'अंगिरापुत्र', अक्षरधाम समिति कैथल की 'अक्षर खबर', लोक सम्पर्क विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ की 'हरियाणा संवाद' आदि पत्रिकाओं की वास्तव में ही एक महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं.

समग्रतः कहा जा सकता है कि हरियाणा का रचनात्मक परिदृश्य हिन्दी साहित्य के संवर्द्धन में हर दिशा से भरा-पूरा विविधोन्मुखी और सर्वांगपूर्ण रहा है, और हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय परिदृश्य में अपनी स्वतंत्र पहचान और हैसियत स्थापित करता है.

यशस्वी विचारकों की हिन्दी महिमा

१-हिन्दी के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती
-अटल बिहारी वाजपेयी

२.वस्तुतः हिन्दी न तो किसी क्षेत्र की भाषा है और न ही किसी धर्म या जाति विशेष की भाषा है, बल्कि यह हमारी अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी भाषा है- **डॉ० शंकर दयाल शर्मा**

३.राष्ट्रभाषा हिन्दी किसी व्यक्ति या प्रान्त की सम्पत्ति नहीं है. उस पर सारे देश का अधिकार है- लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल

भारत में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा हिन्दी है. हिन्दी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन गई हैं-**डॉ० के.आर.नारायणन**

४.हिन्दी आधुनिक भारत की प्रतिनिधि भाषा है और भारत के राष्ट्रीय-सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन करने के लिए उसका महत्व सबसे अधिक है. **-डॉ० नगेन्द्र नगाइच**

५.हिन्दी देश की एकता की कड़ी है **-डॉ जाकिर हुसैन**

६. जब तक हिन्दी ओर नागरी, दोनों का सम्मान है. तब तक संसार में, यह जीवित हिन्दुस्तान है **-डॉ० देवी सिंह चौहान**

६.राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है **-महात्मा गांधी**

हिन्दी महिमा

हिन्दी है भारत की राष्ट्रभाषा, तथा व्यावहरिकता है इसकी शक्ति।
हिन्दी का करें हम प्रचार-प्रसार, इसी में निहित है हमारी राष्ट्र भक्ति।।१।
हिन्दी है भारत की एकता की कड़ी, यह बननी चाहिए सम्पर्क भाषा,
यदि हमें आगे बढ़ना है अपने देश को, तो व्यवहार में अपनानी है राष्ट्र भाषा।।२
भारतवासियों के देनिक जीवन में, हावी न हो पाए अंगरेजी।
इस बात से रहना है हमें निरन्तर सजग, मानसिक दासता की जननी है अंगरेजी।३।
हिन्दी है भारत का प्राण, बढ़ानी है हमें इसकी शान।
हिन्दी से ही बनेगा भारत महान, सब मिलकर करे हमें इसका ज्ञान।४।
भारत है हिन्दीवादियों के लिए, अंगरेजीवादियों के लिए कदापि नहीं
अतएव हमें महत्व देना है हिन्दीवादियों को, अंगरेजीवादियों को कदापि नहीं।।५।

डॉ० महेश चन्द्र शर्मा, साहिबाबाद, गजियाबाद, उ.प्र.

हिन्दी की दशा, दिशा और भविष्य

प्रो0 बी.जे.हिरेमठ
बगलौर, कर्नाटक

अपनी धरती, अपना अंबर, अपना हिन्दुस्तान।
अपनी हिन्दी, अपनी संस्कृति, अपना सदाचार।।

माता एवं मातृभूमि के पश्चात महत्वपूर्ण स्थान मातृभाषा का ही होता हैं. जिससे व्यक्ति के स्वाभिमान और गौरव की पहचान होती है. हिन्दी को संविधान में राजभाषा का स्थान प्राप्त है. लेकिन स्वाधीनता के ६२ वर्ष के उपरांत भी इसे राष्ट्रभाषा बनाने के लिए द्वंछ मचा हुआ है और इस गौरव को पाने के लिए हिन्दी तरह रही है. हिन्दी अपने आप में एक स्वयंपूर्ण भाषा है. राष्ट्रभर में बहुसंख्यकों की भाषा है. राष्ट्रीय आंदोलन गांधीजी के सत्याग्रह, नेताजी के आजाद हिन्द फौज की भाषा है. हिन्दी एक महान, उदार, सरल एवं सरस भाषा है. हिन्दी की दशा पर आचार्य विनोबा भावे जी ने कहा था-'यदि मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता, तो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और आसाम से गुजरात तक, गांव-गांव जाकर मैं भूदान, और ग्रामदान आंदोलनों का क्रांतिकारक संदेश जन मानस तक नहीं पहुंचा सकता. यदि मैं अपनी मातृभाषा मराठी का सहारा लिया होता तो मेरा भूदान यज्ञ का आंदोलन महाराष्ट्र से बाहर नहीं पहुंच पाता.' हिन्दी जन-जन की भाषा हैं. हिन्दी भारतवर्ष की विविधता में एकता की कड़ी है. इसका संपर्क भाषा बनना अत्यंत जरुरी है. दो सौ वर्षो की अंग्रेजी दासता से देश तो आजाद हुआ किन्तु अंग्रेजीयत की मानसिक दासता अभी भी हमारी संस्कृति और सभ्यता पर हावी है. अंग्रेजी माध्यम की संस्थाएं खोलने की होड़-सी लगी हुई है. विश्व के एक सौ से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन हो रहा है. यद्यपि हिन्दी ने हमारे ही देश में राष्ट्रभाषा एवम् राजभाषा का स्थान, गौरव प्राप्त कराने में यह द्वंद, हिचकिचाहट क्यों?

संविधान समिति की बैठक में जब राष्ट्रभाषा का सवाल उठा था तब अंग्रेजी के पक्षधरों की कोई खास आवाज नहीं उठने पर भी, इस विषय पर वाद-विवाद चला था. ऐसे वाद-विवाद की स्थिति में, मुझे डॉ. बाबा साहब अंबेडकर की ये बातें याद आ रही हैं.'जनता में एक भाषा के माध्यम से ही एकता और अखंडता आ सकती है, दो भाषाएं जनता को निश्चय ही विभाजित कर देगी, यह मेरा अटल विश्वास हैं. एक ही राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा से ही राष्ट्र की राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता सुरक्षित रह सकती है.' हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा का स्थान देने के पक्ष में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में अपना मंतव्य रखा था और संविधान में इसके लिए प्रावधान भी किया गया है. यद्यपि कुछ एक स्वार्थीयों की वजह से, हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी को भी १५ वर्ष तक रहने का प्रावधान किया गया था जो आज तक चलता आ रहा है. यदि हम अंग्रेजी का पल्लू थामकर इक्कीसवीं सदी मे प्रवेश करेंगे तो भावी पीढ़ी को हम क्या उत्तर देंगें. संविधान में राजभाषा के बारे में अधिकतम जानकारी खंड १७ के अंतर्गत अनुच्छेद ३४३ से ३५१ तक में विस्तृत रुप से दी गई हैं.

भारत एक बहुभाषी देश है. राष्ट्रीय एकता और भाषायी सामजस्य के लिए यह अनिवार्य है कि बहुभाषिकता के मध्य एकता की खोज की जाए. यह प्रक्रिया उतनी आसान नहीं है जितना ऊपरी तौर पर हम समझते हैं. यद्यपि राष्ट्रीय एवं भावैक्य एकता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है. एक ओर भाषाएं राष्ट्रीय

> राष्ट्रीय आंदोलन गांधीजी के सत्याग्रह, नेताजी के आजाद हिन्द फौज की भाषा हिन्दी थी.
>
> 'यदि मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता, भारत में भूदान आंदोलन का संदेश नहीं पहुंचा पाता.' **विनोबा भावे**
>
> 'जनता में एक भाषा के माध्यम से ही एकता और अखंडता आ सकती है, दो भाषाएं जनता को निश्चय ही विभाजित कर देगी,'-**डॉ. अंबेडकर**
>
> हिन्दी एक महान, उदार भाषा है. हिन्दी जहां भी रहेगी उस प्रांतीय भाषा की बड़ी बहन बनकर रहेगी.
>
> किसी भी आजाद देश में सामान्य संचालन से लेकर राजकाज के व्यवहार तक माध्यम के रुप में उसकी अपनी ही देशीय भाषाएं हक़दार होती है न कोई पराए देश की भाषा.

एकीकरण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है, तो दूसरी ओर समाज में तनाव, विद्वेष, द्वंद और विघटन की प्रवृत्ति को भी जन्म दे सकती हैं. अतः यह आवश्यक है कि हमें भाषा की यह दोहरी संभावना को सजग भाव से सोचे और समझे तथा एक ऐसी भाषा नीति को अपनाएं, जो देश की आर्थिक, सामाजिक विकास में सहायक हो. जिस दिन भारतीय भाषाओं को उनका उचित अधिकार मिल जाएगा, उसी दिन से भारत में भाषायी संघर्ष समाप्त हो जाएगा. ज्ञान और भाषा का संबंध अविच्छेद है. भाषा बिना जाग्रति ही नहीं, बल्कि स्वप्न भी संभव नहीं क्योंकि हमारा स्वप्न भी भाषाश्रित है.

यह बात सर्वविदित है कि हम लोग प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से १४ सितंबर को 'हिन्दी दिवस' धूम-धाम से मनाते हैं, संगोष्ठियों का आयोजन करते हैं, प्रतिज्ञाएं लेते हैं और बाद में भूल जाते हैं, प्रतिफल शून्य के बराबर ही होता है.

भारत में, हर क्षेत्रीय भाषा का अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व रहता है. भाषा संस्कृति एवं संस्कार की 'रीढ़ की हड्डी' का काम करती है. हर क्षेत्रीय भाषा का जितना विकास होगा, उतना ही हिन्दी भी समृद्ध होगी क्योंकि राज्य में उस प्रांतीय भाषा का सार्वभौम रहेगी और राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क भाषा हिंदी का बोलबाला रहेगा. हिन्दी भाषा के साथ केवल हमारी अस्मिता का ही प्रश्न नहीं बल्कि हमारे अस्तित्व का भी प्रश्न है. यह वांछनीय है कि किसी भी राष्ट्र की सामान्य जन-मन की भाषा ही प्रशासन की भी भाषा हो राष्ट्रभाषा या राजभाषा हो. किसी भी आजाद देश में सामान्य संचालन से लेकर राजकाज के व्यवहार तक माध्यम के रुप में उसकी अपनी ही देशीय भाषाएं हक़दार होती है न कोई पराए देश की भाषा. जन-जन, जन-मन की हिन्दी ही देश में सपर्क-भाषा और राष्ट्रभाषा का स्थान ग्रहण कर, सार्वभौम पद पर आसीन होने योग्य है. वस्तुतः देश को आजादी दिलाने में तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को देश भर में जगाने में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका सराहनीय है. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने समस्त भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली भाषा की आवश्यकता पर जोर देकर कहा था कि 'कोई भी देश सच्चे अर्थो में तब तक स्वतंत्र नहीं जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता.' आज हिन्दी तेजी से विकसित दिशा की ओर बढ़ रही है. यद्यपि कुछ राजकीय नेतागण आज भी अंग्रेजी में भाषण देकर अपना बड़प्पन जताते हैं.

हिन्दी की स्थिति हमने पत्थर की उस मूर्ति के समान कर दी है जो मंदिर में उच्च्व स्थान पर स्थापित है, भजन-कीर्तन, गुणगान होता है, लेकिन उसके प्राणों का संचार नहीं के बराबर है. केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत १९५५ से हिन्दी की दशा सुधारने के लिए अनेक हिन्दी शिक्षण संस्थाओं का जन्म हुआ है. आगरा, मद्रास, बेंगलूर, हैदराबाद आदि सभी बड़े शहरों में हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार कार्य जोर-जोर से चल रहा है. यद्यपि निहित स्वार्थ प्रवृत्ति हमें राष्ट्रीय एकता तथा हिन्दी का विकास से अलग हटाकर अपनी स्वार्थ साधना की दिशा की ओर ले जा रही है. भाषा तथा संस्कृति ही राष्ट्र के प्राण होते हैं. बिना निज भाषा तथा संस्कृति के कोई भी राष्ट्र निर्जीव कहलाता है. इस संबंध में भारतेंदु हरिश्चद्र जी की काव्योक्ति सराहनीय है-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।

स्वार्थी राजकारिणियों के कारण ही हिन्दी को उसका उचित अधिकार नहीं मिल रहा है. यदि हम हिन्दी की प्रगति एवं विकास चाहते हैं तो सबसे पहले 'त्रिभाषा सूत्र' को ईमानदारी से कार्यान्वित करना चाहिए. भाषा संगोष्ठियां, सम्मेलन, शिविर अपने ढंग से चलते रहना चाहिए. अंग्रेजी एवं अंग्रेजीयत की मानसिकता का त्याग पहले होना चाहिए. यदि संविधान में संशोधन की आवश्यकता हो तो शीघ्र संशोधन करना चाहिए. हमारे निर्वाचित सांसदो, विधानसभा, विधान परिषद के सदस्यों को और अन्य निर्वाचित सदस्यों को हिन्दी में 'प्रमाण वचन' लेना अनिवार्य करना चाहिए. डॉ० बाबा कामिल बुल्के विदेश से आकर, हिन्दी का गहराई के साथ अध्ययन करके, हिन्दी में पांडित्य प्राप्त की तो क्या हम भारतीयों के लिए यह क्या कष्ट हो सकता है? आत्मशक्ति बलवान हो तो कदापि नहीं.

हिन्दी एक महान, उदार भाषा है. हिन्दी जहां भी रहेगी उस प्रांतीय भाषा की बड़ी बहन बनकर रहेगी. हिन्दी कभी भी किसी का भी अनिष्ठ नहीं करती. हम सभी भारतीय निष्ठा, श्रद्धा के साथ हिन्दी को उसका वास्तविक हक़ दिलाने में निस्वार्थ भावना से प्रयत्न करें तो जरुर वह अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्थाना ग्रहणा करेगी. उसे गंदी राजनीति से अलग रखना चाहिए. प्रत्येक भारतीय नागरिक के दिल में हिन्दी के प्रति आदर और गौरव की भावना होनी चाहिए.

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी १९७७-७८ में जब वे विदेश मंत्री थे, अंतराष्ट्रीय संघ में हिन्दी में भाषण दिया था. वर्तमान बहुत सारे देशों के प्रतिनिधि अपने-अपने देश की राजभाषा में ही वक्तव्य दिया करते हैं. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य में कितनी मार्मिकता है, उसे समझने की चेष्ट करें.

जिनको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान।
वह नर नहीं पशु निरे, हैं और मृतक समान।।

शख्सियत

बी.बी.सीः एक परिचय

✍डॉ0 गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

बीबीसी यानी ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन नहीं बल्कि इंदौर निवासी फिल्मी पत्रकार ब्रज भूषण चतुर्वेदी. ३१ अक्टूबर १६३७ को स्व०श्रीमती कमला बाई के मातृत्व व स्व० बद्री प्रसाद चतुर्वेदी के पितृत्व में जन्में श्री चतुर्वेदी १६७३ से वार्षिकी फिल्मी पत्रिका सुचित्रा (फिल्मी डायरेक्टरी) का संपादन व प्रकाशन शुरु किए तब से वे पूरे नाम से नहीं बल्कि बी.बी.सी नाम से अधिक जाने जाते हैं. इस संक्षिप्त नामकरण की सलाह फिल्मा निर्माता/निदेशक रामानन्द सागर ने दिया था.

संघर्षमय जीवन की जीती जागती मिशाल श्री बीबीसी जो १०वर्ष की उम्र में हॉकर के रुप में अपनी जीवन यात्रा शुरु की, १३ वर्ष की उम्र में ज्योति टॉकीज, इंदौर में गेट कीपर की नौकरी की. वही बुकिंग क्लर्क, सुपरवाइजर, सहायक सिनेमा मैनेजर के पद पर रहे. इसी बीच एक वाचनालय से पुस्तकों का लेन देन, लेखन कार्य भी शुरु किया, उसके बाद नीलकमल (पूर्व में डायमंड टाकीज) में मैनेजर के पद पर १६६१ तक रहे. सिनेमा के टाकीजों में नौकरी करते-करते सिनेमा उन्हें रास आ गया. संघर्ष के इस दौर में भी उन्होंने पढ़ाई को तिलांजलि नहीं दी. उन्होंने एम.ए., बी.एड. की डिग्रिया प्राप्त की. १६६१ में शासकीय अध्यापक, व्याख्याता, सहायक प्राचार्य पदों पर १६६७ तक विराजमान रहें.

१८वर्ष की उम्र में आपकी शादी उर्मिला से हो गई. आपके दो बेटे विजय, व विराम चतुर्वेदी तथा दो बेटियां विजया व विनिता चतुर्वेदी हैं. वर्तमान में सभी शादी-शुदा है व नियोजित है. सिनेमा और फिल्मों के साये में बीताये गये लम्बे समय ने चतुर्वेदी का रुझान सिनेमा की ओर किया और अध्यापन क्षेत्र में रहते हुए भी फिल्म पत्रकारिता की ओर अग्रसर हुए. अपनी ललक, लगन और लम्हों को अन्य सिनेमा प्रेमियों में बांटने के लिए उन्होंने एक वार्षिकी फिल्मी पत्रिका सुचित्रा का प्रकाशन शुरु किया. पत्रिका ने अपने नाम के अनुरुप फिल्म उद्योग की सभी प्रकार की गतिविधियों, फिल्माकारों के पते, टेलीफोन नम्बर, जीवन परिचय, वर्ष की फिल्में, पुरस्कार आदि से अपने पाठकों को अवगत कराते रहे हैं. सुचित्रा के कारण वे निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, अभिनेत्री, गायक, संगीतकार आदि फिल्मकारों के सम्पर्क में आये. लगभग सभी प्रमुख फिल्मकारों के सम्पर्क में आये. लगभग सभी फिल्मकारों के संग उनके फोटो एलबम हैं.

बीबीसी जी को अब तक ५२ अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है तथा दादा साहब फालके सम्मान-२००७ सहित करीब ६० सम्मान मिल चुके हैं. इनमें मुख्य है-पत्रकार गौरव-२०११, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद, लायन्स इंटरनेशल सम्मान, एशिया पैसेफिक अवार्ड-६६, यूनाइटेड लेखक एसो.फेलोशिप सम्मान, बेस्ट सिटीजन ऑफ इंडिया अवार्ड-६६, ग्लोरी ऑफ इंडिया अवार्ड, सी.सी.सी.ए सम्मान ट्राफी, भारत भूषण अवार्ड, हिमालय और हिन्दुस्तान सम्मान-२००४, प्रेस क्लब ऑफ इंदौर सम्मान, भारत श्री सम्मान, जन परिषद सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, शांतिकुज देव संस्कृति विश्वविद्यालय सम्मान, महाराज जैन स्मृति सम्मान हैं.

वर्तमान में भारत व विश्व सिनेमा पर लेखन कार्य जारी हैं.

श्री ब्रजभूषण चतुर्वेदी
के ७५वें जन्म दिवस के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी
लेखक/पत्रकार/समाजसेवी
सचिव-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद, **राष्ट्रीय अध्यक्ष**-मीडिया फोरम ऑफ इंडिया सोसायटी

भ्रष्टाचार : कारण और निवारण

✍डॉ0 गार्गी शरण मिश्र 'मराल'
जबलपुर, म.प्र. 482002

पिछले अंक का शेष भाग

वर्तमान समाज में भौतिक सुख-सुविधाएं सुख का आधार और आनंद का भंडार मानी जाती हैं. इन्हीं की प्राप्ति हेतु आज का मनुष्य संपत्ति संग्रह करता है. अतः यदि हम चाहते है कि लोग भौतिक सुख-सुविधाओं का त्याग करें तो हमें अनेक विकल्प के रूप में ऐसी वस्तुएं उपलब्ध करानी चाहिए जो उन्हें संपत्ति-संग्रह के बिना ही आनंद प्रदान कर सकें. भारतीय संस्कृति में भौतिक सुख सुविधाओं के विकल्प के रूप में कला और साहित्य साधना, भक्ति-भावना, ज्ञानार्जन एवं गुणार्जन, क्रीड़ा या खेलकूद, अध्ययन- अध्यापन, सेवा या परोपकार को अपनाया गया. ये विषयानंद के श्रेष्ठतर विकल्प हैं. क्योंकि इनसे न केवल स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त होता है वरन परमार्थ का मार्ग भी प्रशस्त होता है. कला और साहित्य के माध्यम से हमें सस्ता, उत्कृष्ट और स्वस्थ मनोरंजन सहजता से प्राप्त हो सकता है.

> जो यह सोचते है कि सख्त कानूनी कार्यवाही से भ्रष्टाचार पर लगाम लगाई जा सकती है. वे आंशिक सफलता ही अर्जित कर सकते हैं. कानून से भ्रष्टाचार के वृक्ष की डालियों को केवल छांटा जा सकता है. लेकिन भविष्य में भ्रष्टाचार के वृक्ष में नई शाखाएं फूटकर उसे और हरा-भरा कर देगीं.

भौतिक सुख-सुविधाओं से मिलने वाला आनंद न केवल क्षणिक और खर्चीला है वरन् हमें अशक्त और अस्वस्थ बनाने वाला है. वह स्वस्थ मनोरंजन तो है ही नहीं. अतः विषय -सुखों में आनंद ढूंढने वाले लोग भारी रकम चुकाकर अपने लिए अस्वस्थता, अशक्तता तथा रोगों की सौगात ले आते हैं.

यह बात ध्यान देने योग्य हैं कि भौतिक सुख-सुविधाओं का जमावड़ा शहरों में ही होता है. इसी से पश्चिम की भोगवादी संस्कृति शहरी संस्कृति हैं. इसके विपरीत भारत की त्यागवादी संस्कृति ग्रामीण संस्कृति है अथवा यों कहे कि वह आरण्यक संस्कृति है जहां भौतिक सुख-सुविधाओं का जमावड़ा नहीं होता वरन् जहां ज्ञानार्जन और चरित्र निर्माण की कठोर साधना चलती है. यही कारण है कि भारत के ऋषि मुनियों के आश्रम, जो भारतीय संस्कृति के मूल स्रोत और पोषक थे अरण्यों में स्थापित किये जाते थे. यहां उनका प्रकृति से भी निरंतर सानिध्य बना रहता था. फलतः उनका जीवन भी स्वभाविक या प्राकृतिक होता था. वह शहरी जीवन की तरह प्रकृति से दूर और कृत्रिम नहीं होता था. इतना ही नहीं भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों के आश्रम शिक्षा के आदर्श एवं उत्कृष्ट केन्द्र होते थे जहां चरित्र-निर्माण को प्राथमिकता दी जाती थी. जबकि आज के भारतीय विद्यालयों, महाविद्यालयों में चरित्र शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है.

यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिए कि हमारे जीने की आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान आदि सीमित हैं. अतः उनके लिए धन संग्रह की होड़ करने की आवश्यकता नहीं है. लेकिन विषय सुखों की कामनाएं अनंत हैं. और उनकी प्राप्ति के लिए अपार धनराशि भी कम पड़ जाती है. फिर उनके लिए धन संग्रह हमें नारकीय जीवन की ओर ले जाता है. इसमें परिवार, समाज और सारे विश्व की सुख शांति खतरे में पड़ जाती है.

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भ्रष्टाचार का कारण है विषय-सुखों या भौतिक सुख-सुविधाओं की अधिकाधिक प्राप्ति हेतु संपत्ति संग्रह की अपरिमित होड़. ऐसी स्थिति में यदि हम भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहते हैं तो हमें अपनी आवश्यकताओं तक सीमित रहना होगा. फलतः हमें अनंत कामनाओं-भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति की मृगतृष्णा को छोड़ना होगा. इतना ही नहीं इस हेतु हमें संपत्ति संग्रह की बजाय ज्ञान और गुणों के संग्रह में रुचि लेनी होगी. भौतिक सुख-सुविधाओं के विकल्प के रुप में खेलकूद, कला, साहित्य, भक्ति भावना, अध्ययन, सेवा या निष्काम कर्मयोग को अपनाना होगा. आत्म सेवा की बजाय दीन-दुखियों की सेवा में रुचि लेनी होगी.

जो लोग यह सोचते है कि सख्त कानूनी कार्यवाही से भ्रष्टाचार पर लगाम लगाई जा सकती है. वे आंशिक सफलता ही अर्जित कर सकते हैं. कानूनी कार्यवाही से भ्रष्टाचार के वृक्ष की जड़ों को समाप्त नहीं किया जा सकता. यह तो भ्रष्टाचार के वृक्ष की डालियों को छांटने जैसा है जिससे आंशिक सफलता तो मिलेगी लेकिन भविष्य में भ्रष्टाचार के वृक्ष में नई शाखाएं फूटकर उसे और हरा-भरा कर देगीं.

हास्य–व्यंग्य

चलो जंतर मंतर

अजय चतुर्वेदी 'कक्का'
सोनभद्र, उ.प्र.

बगुलपंखी खादी का धोती-कुर्ता, सर पर गांधी टोपी लगाये अपनी ओर तेजी से आते शख्स को देख मैं चौका. अरे! अन्ना हजारे और मेरे यहां! नहीं-नहीं, ये तो गदेली पर खैनी भी रगड़ रहा है. मेरे ख्याल से अन्ना जी खैनी खाते नहीं. यदि खाते भी होंगे तो इस तरह फूहड़ों जैसा सड़का चलते खैनी थोड़े ही रगड़ेंगे. फिर कौन हो सकता है. वह अपरिचित दिखने वाला व्यक्ति जब और पास आया तो उसे देख मेरी आंखे फटी की फटी रह गई. साश्चर्य पूछा-'पंण्डित जी आप! ये कैसा हुलिया बनाये हो! कहीं जा रहे हो! 'अरे! बुद्धि से पैदल. देख रहे हो कि मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं और पूछ रहे हो कि कहां जा रहे हो?'

'पण्डित जी! यदि मैं नामसझ हूं तो मेरे पास क्यूं आये हो. मुझसे क्या चाहते हो?'

'समर्थन.'

'किस बात के लिए.'

'वो तो बताऊंगा ही. पहले यह बताओ कि यदि धन और धर्म दोनों खतरे में हों तो किसे बचाओगे?'

'दोनों को बचाऊंगा.'

'यदि दोनों में से एक को बचाना पड़े तो?'

'धर्म को बचाऊंगा. धन तो आता-जाता रहता है.'

'वाह मियां! मैं तुम्हें हण्ड्रेड परसेंट मार्क्स देता हूं. आज धर्म यानी इज़्जत ख़तरे में है. उसी को बचाने के लिए निकला हूं. अब बोलो मेरा साथ दोगे'

'पण्डित जी! माना कि आज सड़क चलते मां-बहनों की इज़्ज़त लूटी जा रही है. वे डर के मारे अपने घरों से बाहर नहीं निकलना चाहती लेकिन आप ठहरे मर्द. भला आपकी इज़्ज़त पर कौन डाका डाल रहा है.'

○ मेरी मांग है कि लोकपाल मत लाओ. भ्रष्टाचारियों को मत पकड़ो. यदि कहीं भ्रष्टाचार दिखे भी तो पर्दा डालों.'

○ पुलिस हो या अन्य कोई संस्था, क्या आज तक किसी बड़े आदमी पर आरोप साबित कर पाई है. क्या किसी को कोई दण्ड मिल पाया है. मुकदमा चलता है तो चले.

'अरे, कूपमण्डूक! मैं अपना नहीं, देश की इज़्ज़त बचाने के लिए निकला हूं. मैं पूरे देश में घूमूंगा और लोगों से समर्थन मांगूगा. हजार-पांच सौ लोग भी मेरे साथ हो लिये तो चौदह अगस्त को जंतर-मंतर पर आमरण अनशन पर बैठूंगा. सरकार और सारे राजनैतिक पार्टियां जब तक मेरी बात नहीं मान लेंगी. मैं अनशन नहीं तोड़ूगा. जान भले ही दे दूंगा लेकिन अनशन छोड़कर नहीं भागूंगा.'

'पण्डित जी भ्रष्टाचार से देश को मुक्त कराने, लोकपाल बिल लाने और विदेशों में जमा भारत के अकूत काले धन को वापस लाने के लिए अन्ना हजारे और बाबा रामदेव पहले से ही देशव्यापी मुहिम छेड़े हुए हैं. आप उसी में क्यों नहीं शामिल हो जाते. अलग से ये सब करने की क्या जरुरत है'

'बरखुरदार! मेरी मांग इन दोनों के विपरीत है. इनकी मांग है कि लोकपाल बिल लाओ. भ्रष्टाचारियों को पकड़ो. भ्रष्टाचार रोको. जबकि मेरी मांग है कि लोकपाल मत लाओ. भ्रष्टाचारियों को मत पकड़ो. यदि कहीं भ्रष्टाचार दिखे भी तो पर्दा डालों.'

'पण्डित जी! कहीं आप सनक तो नहीं रहे हैं.'

'चोप्प उल्लू के पट्ठे! सनक मैं नहीं गया हूं. सनक गये बाबा रामदेव, अन्ना हजारे और तुम जैसे तथाकथित समझदार लोग. गांव घर में एक कहावत है-हथवा क गइल, गड़लकिउ गइल. यानी कि जो गया वह तो गया ही जो चला गया उसे बचाने के फेर में जो बचा था वह भी चला गया.

भाई मेरे! भ्रष्टाचार तो शुरु से ही है लेकिन लगभग दो दशक से जिस तरह से भ्रष्टाचार-घोटाले के एक से बढ़कर एक खुलासे हुए और हो रहे हैं. उनका आज तक क्या हुआ. कभी ये पकड़े जाते है. आज जेल जाते हैं, कल छूट जाते हैं. वैसे भी बड़े लोगों के लिए क्या जेल और क्या घर. उनके लिए दोनों एक बराबर है. सी.बी.आई. हो, पुलिस हो या अन्य कोई संस्था, क्या आज तक किसी बड़े आदमी पर आरोप साबित कर पाई है. क्या किसी को कोई दण्ड मिल पाया है. मुकदमा चलता है तो चले. क्या फ़र्क पड़ता है. होना-जाना कुछ नहीं हंसी-हंसारत ऊपर से. इसीलिए कहता हूं कि जो चोरी-बेईमानी-भ्रष्टाचार हो चुके हैं उन्हें मत खोदो और जो हो रहे हैं उन पर पर्दा डालो! क्योंकि जब आज तक भ्रष्टाचारियों का कुछ नहीं हुआ तो आगे भला क्या होगा! और जब कुछ होने वाला ही नहीं तो हल्ला-गुल्ला मचाने से भला क्या फायदा. धन तो लूटा ही जा रहा है. हो-हल्ला कर इज़्ज़त भी लुटाई जा रही है. दुनियां के आगे मुंह पीटाया जा रहा है.

किसी कवि ने बहुत पहले की

स्पष्ट कर दिया है-राजा ही जब चोर सिपाही क्या कर लेगा. लोकपाल बिल लाओ-लोकपाल बिल लाओ चिल्लाया जा रहा है. लोकपाल बिल बन ही गया तो क्या हो जायेगा. उसके अधिकारी -कर्मचारी क्या पाताल से आयेंगें? भारतीय ही होंगें? किसका-किसका नाम लोगे. हमाम में सभी तो नंगे हैं.

पहले एक राजा होता था. अकेले देश और जनता को चूसता था. लोकतंत्र में हर सांसद-हर विधायक राजा है. जो चाह रहा है, वह कर रहा है. भला राजा को कौन रोक सकता है. एक-एक राजा के भी ना जाने कितने चंगू-मंगू हैं. एक अन्ना हजारे और एक बाबा रामदेव क्या कर लेंगें. भाई मेरे जग हंसाई कराने से बेहतर है कि जैसे पहले चुप थे वैसे ही अब भी चुप्पी साध के रखों. धन तो जा ही रहा है. इज़्ज़त तो बचाओ. पर्दे में पड़े और पर्दे में हो रहे भ्रष्टाचार को खोद-खोद कर बदबू तो मत फैलाओ. बोलों मैं सही कह रहा हूं कि नहीं? सही कह रहा हूं तो मेरा समर्थन करो. देश हित में और कुछ नहीं कर सकते तो मेरे साथ तो चलो. चलो, लोगों का कारवां जोड़ते हुए मेरे साथ जंतर मंतर चलो.

एस.एम.एस.रचना

जिन्दगी वो जो गुजर जाये
आंसू वो जो बह जाये
खुशी वो जो मिल जाये
ग़म वो जो बीत जाये
मगर दोस्ती वो जो हमेशा साथ निभाये

०६३०७७६२३०

कजरी झूले लाया सावन
मलहारो को भाया सावन
तपती धरती को तर करके
सबके मन पर छाया सावन

अनुप कटियार, 9415870978

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक क्रान्ति)

एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011
कानाफुसीः 09335155949 ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,
मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.
अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्न पते पर भेजें
नाम :..
पिता / पति का नाम :...
पता :..
डाकखाना :..जनपद...
राज्य :..पिन कोड...
दूरभाष / मो0...ईमेलः...

विशेष नियमः

01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें
03 सदस्यता शुल्क पेइन स्लिप के माध्यम से अथवा सीधे यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः 538702010009259
आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): UBIN0553875
में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है। विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / —	रु055 /
वार्षिक	रु0 110 / —	रु0600 /
पॉच वर्ष :	रु0 500 / —	रु0700 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / —	रु05870 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / —	रु026700 /

सम्मानार्थ प्रविष्टियॉ आमन्त्रित है

साहित्य जगत में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष से निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान-(नाटक विधा पर)-एक नाटक तीन प्रतियों में जो २००० शब्दों से अधिक का न हो।

कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

डॉ.किशोरी लाल सम्मान-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में

प्रवासी भारतीय सम्मान-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हो. एक रचना तीन प्रतियां

हिंदी सेवी सम्मान-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

राजभाषा सम्मान-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए.

युवा कहॉनीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-सम्बन्धित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

कला/संस्कृति सम्मान-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में

बाल साहित्यकार सम्मान-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में.

राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए,

राष्ट्रभाषा सम्मान-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियो में

अन्तार्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान- ऐसी विदेशी नागरिक जो हिंदी की किसी भी प्रकार से सेवा कर रहे हैं. प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

पुलिस हिंदी सेवा सम्मान- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियो में

सांस्कृतिक विरासत सम्मान- ऐसे व्यक्ति/संस्थाएं जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

युवा पत्रकारिता सम्मान-(उम्र ४० वर्ष)-पत्रकारिता के क्षेत्र में गत पांच वर्षो में किए गए कार्यो का सम्पूर्ण विवरण, तीन प्रतियों में

विधि श्री-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में

डॉक्टरश्री-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

शिक्षक श्री-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

सैनिक श्री-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विज्ञान श्रीः विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

प्रशासक श्री-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विहिसा अलंकरण-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी.

साहित्य के क्षेत्र मेंः साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

समाज सेवा के क्षेत्र मेंः समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाज गौरव

पत्रकारिता के क्षेत्र मेंः सम्पादक श्री, पत्रकार श्री, सम्पादन रत्न, पत्रकार रत्न।

विशेषः१. प्रविष्ट्रि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जबाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा युनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा से 'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य

सेवा संस्थान, इलाहाबाद' के नाम से खाता संख्याः 538702010009259 में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जायेगी. जो जनवरी २०१२ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तके/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएगी. रचनाओं के साथ मोलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्ट्रियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. विवाद के संदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वजनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० नवम्बर २०११

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतू प्रविष्टि
संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले.. .सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा विवरण निम्नवत हैः-

नाम : ....
पिता/पति का नामः...
पताः...
....
दू०/मो०संख्या...........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः..
विधा...................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियां..............
धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................संख्या.......................
....

मैं शपथ पूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें मान्य करता/ करती हूं

भवदीय
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

गति न पवन की भी जो मुझसे होड़ कर सके मैं ऐसे पथ का राही हूं जिसको क्षण भर भी विश्राम नहीं

जसप्रीत कौर फलक,
लुधियाना, पंजाब

> यह क्रांति नहीं सम्पूर्ण क्रांति है. अगर लोगों की निराशा और घुटन को रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं मिली तो यह क्रांति न जाने क्या स्वरुप ले ले.
>
> जनता कह रही है-भूख है मंहगाई है, भ्रष्टाचार है, जनता का कोई भी काम नहीं निकलता बगैर रिश्वत दिए....हजारों नौजवानों का भविष्य अंधेरे में पड़ा है.

वर्तमान युग में भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाहन करने वाले तथा महंगाई, भूख, बेरोजगारी एवं गरीबी के प्रति क्रांतिकारी रुप में सामने आने वाले अन्ना का आज भारत देश में एक महत्वपूर्ण स्थान है. धन्य है यह भारत देश जहां महात्मा गांधी और अन्ना जैसे लोग जन्म लेकर देशवासियों के लिए कुछ कर गुजर जाते हैं. अन्ना जी ने तो संकल्प लिया है यदि लोकपाल बिल न पास हुआ तो इस आन्दोलन में वह अपना जीवन दान कर देंगे. इससे अनेकों व्यक्तिगत व सामाजिक समस्याओं का समाधान हो सकेगा. भारत देश के लिए अन्ना जी ने तो अपना जीवन समर्पित कर ही दिया है और लोगों के उल्लास भरे स्वागत ने अन्ना को विश्वास दिलाया है कि इस जंग के लिए हम सभी तैयार हैः-

नये भारत का निर्माण करना है
स्वप्न अन्ना का पूरा करना है।

सर्वप्रथम किसी आदर्श के प्रति अपना जीवन समर्पण करना, घोर निंद्रा में डूबे हमारे बदनसीब राष्ट्र को जाग्रत कर उसे भ्रष्टाचार से मुक्त करने के लिए आन्दोलन और जेल में जाने से अन्ना जरा भी संकुचाये नहीं. ऐसा प्रतीत होता है. देश के क्षितिज पर सन् १६४२ आ रहा है. एक क्रांतिकारी परिस्थिति बन गयी है और अगर लोगों की निराशा और घुटन को रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं मिली तो इस परिस्थिति में यह क्रांति न जाने क्या स्वरुप ले ले यह क्रांति नहीं सम्पूर्ण क्रांति है. अगर लोगों की निराशा और घुटन को रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं मिली तो इस परिस्थिति में यह क्रांति न जाने क्या स्वरुप ले ले. यह क्रांति नहीं सम्पूर्ण क्रांति है जिसमें अन्ना जी हमारे अग्रदूत हैं.

अन्ना तो है क्रांतिदूत,
भारत माँ का सच्चा सपूत

यह तो एक मंजिल है जो रास्ते में है. जिस स्वराज के लिए देश की लाखों जनता बार-बार जेलों को भरती रही थी. लेकिन आज ६४ वर्ष के बाद भी जो स्वराज्य है. उसमें जनता कह रही है-भूख है मंहगाई है, भ्रष्टाचार है, जनता का कोई भी काम नहीं निकलता बगैर रिश्वत दिए....हजारों नौजवानों का भविष्य अंधेरे में पड़ा है. उनका जीवन नष्ट हो रहा है. शिक्षा पाकर भी दरबदर ठोकरें खाना, मगर नौकरी नहीं मिलती. दिन प्रतिदिन बेरोजगारी बढ़ती जा रही है. आज देश भर में जो जागृति का उदय हुआ है. यह एक अच्छी निशानी है. मानव समाज का इतिहास बताता है कि कितनी सभ्यतांए जो नीचे गिरी वह इसलिए कि उस समय जो भी चुनौतियां अंदर बाहर से उठी, जब तक जबाब दिया जाता रहा, तब तक उनका विकास होता रहा, लेकिन जब उत्तर नहीं दे पायी, तो उनमें गिरावट हुई. आज भी यदि भ्रष्टाचार के विरुद्ध जवाब नहीं दिया गया तो देश नहीं उठेगा.

आज हमारे देश कि जो परिस्थिति बनी हुई है. इस परिस्थिति में जो कुछ घटनाएं घट रही है. वह इस परिस्थिति का हिस्सा है. जिस खतरे से आज हमारा देश गुजर रहा है, यह खतरा हमारे अंदर से पैदा हुआ है. हमारे दिमागों में वह खतरा है. भारत का हजारों वर्षो का इतिहास बताता है कि भारत के दुश्मन कहीं बाहर से नहीं आये. अंदर से पैदा हुए है. जब हमारे आपस के झगड़े हुए, हमारे अंदर फूट हुई उसके लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार है. दुश्मन हमारे दिमागों में बैठा है. हमारे दिमागों में आज ऐसी एक हालत पैदा हो गयी है कि हम अपने पर काबू नहीं रख पा रहे हैं. एक मानसिक अराजकता सी फैली हुई है और तरह-तरह से वह अराजकता प्रकट हो रही है. इस देश में हम अपनी गलतियों को छुपाने, भुनाने बनाने और बली के बकरे ढूंढने में भुत माहिर हो गये हैं. अब समय है कि हम अपनी दिशा सुधार लें. आज हमें तन-मन धन से देश को भ्रष्टाचार से मुक्त करवाना है. अपनी सभ्यता को फूलने फलने का मौका देना है. अगर वर्तमान व्यवस्था शीघ्र नहीं बदलती और भूखी, दुखी और शोषित जनता की सारी आशाएं इस तरह टूटती चली जाएंगी तो आगे एक भयंकर अन्धकार है.

जय हिन्द जय हिन्दी जय हिन्द जय हिन्दी

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःsahityaseva@rediffmail.com

हमारे उद्देश्य

हिन्दी का प्रचार प्रसार करना

हिन्दी प्रेमियों/समाज सेवियो/कलाकारों को सम्मानित करना

काव्य गोष्ठी, परिचर्चा, पुस्तक–प्रदर्शनी, लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

स्नेहाश्रम

(हिन्दी विश्वविद्यालय, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, पुस्तकालय, गौशाला, चिकित्सालय, स्नेह मंदिर का निर्माण)

महोदय,
मैं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान का साधारण/स्थायी/आजीवन/संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/बैंक ड्राफ्ट/ पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.

अतः मेरा सदस्यता प्रमाण–पत्र निम्न पते पर भेजें

नाम :..

पिता/पति का नाम :..जन्म तिथिः..

पता :..

डाकखानाः....................................जनपद.............................राज्य :................................पिन कोड.........................

दूरभाष/मो0...ईमेलः...

शैक्षणिक योग्यता :..

अन्य साहित्यिक संगठन जिससे आप जूड़े हो..

आप हिन्दी/समाज की किस प्रकार सेवा करना चाहते है...

<u>विशेष नियमः</u> हस्ताक्षर

01 कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि रखता हो, समाज सेवा में रुचि हो। सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए. कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें

02 सदस्यता शुल्क पेइन स्लिप के माध्यम से अथवा सीधे यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः 538702010009259, आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): UBIN0553875 **विजया बैंक** के खाता क्रमांकः 718201010002173 आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): VIJB0007182 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

03 संस्थान के प्रकाशनों में 50 प्रतिशत की छूट

04 सरंक्षक सदस्यों का नाम बैनरों, पैड में अंकित किया जाएगा.

	सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
01	साधारण	रु0 50/–	रु0250/
02	स्थायी	रु0 200/–	रु01000/
03	आजीवन	रु0 1100/–	रु05500/
04	संरक्षक	रु0 5001/–	रु025000/
05	बाल्य	रु0 10/–रुपये	रु0 50/–

श्री हरिहर चौधरी, ओड़िशा की कविताएं

परिचय

ओड़िशा बंगाली तेलुगु तमिल
नहीं हमारा परिचय
केरली मराठी असमिया नहीं
हम है भारतीय
कन्नड़ी, कश्मिरी नहीं गुजराती
नहीं पंजाबी खाली
और न होंगे अंग्रेजी किंकर
प्यारी हमारी हिंदी बोली।
स्वाधीन तिरंगा उड़े फर फर
नहीं किसी से भ्रांति भय
बाहरी बैरी, भंजन हम
श्रृंखलित भारतीय।

जीवन-मृत्यु

छोटी-छोटी कविताएं
प्यारों के लिए मर मिटना ही
कहा जाता है जीवन
जो मिटना नहीं जानता है
वह जिंदा-मौत समान।

कुछ करके नया दिखाना

हिसाब किताब करते करते
जिंदगी हुई गोल,
कुछ करके नया दिखाना ही
इन्सान है अनमोल

अपने में ही आनंद

औरों से तुम यारी करो
पाओ नतीजा जहर
अपने में जब हो मशगुल
पाओ आनंद अपार।

आवाज और खामोशी

बढ़ती आवाज घटा देती है
दिल की हलचल
खामोशी पाकर बाकई दुनिया
उठती है मचल।

जिंदगी और मंजिल

जिदंगी तो एक पहाड़ी सफर है
फिसल जाते हैं पैर
घुटने टेक तुम्हें रेंगना होगा
मंजिल है जाना ऊपर।

दिल और दिमाग

बातें दिमाग की
कयामत का तूफान
दिल की मुहब्बत अपना लो
बैंकुठ समान।

बालों का तबादला

ठूढी पर जब बाल का राज
निराली हो जाती है चालख
सर के पीछे तबादले से
निकालता बाल अपनी खाल।

अभिन्नता

भिन्न-भिन्न हैं वेश भूषा
भिन्न-भिन्न जीवन की रीति,
मिट जाएगी हिंसा, नफरत
अगर हो जाय प्रीति।

चंद प्रेम

बड़ी बड़ी बातों की चापलूसी
चाभी है कब्र खाने की,
चंद प्रेम के आंसुओं से हम
पोंछ सकते वेदना दिल की।

मुक्ति

अगर खुली हवा मिले तो
दिवारें तोड़ना अच्छा है,
अगर छुटकारा मिले तो
दम तोड़ना भी अच्छा है.

यारी दुश्मनी

कोई भी नहीं किसी का यार
या किसी का दुश्मन,
मीठे बोलो घमंड तोड़ो
और निज दोष अड़चन।

खुदा और कवि

मेरे अरमानें होते हुए भी
अगर खुदा की तमन्ना नहीं,
तो, मुझमें जोश भी है
खुदा को परवाह नहीं।

कहानी प्रतियोगिता हेतू कहानियां आमंत्रित है

पुरस्कार राशि २१०००/-रुपये

सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. राज बुद्धिराजा की तरफ से **'डॉ. राज बुद्धिराजा कहानी प्रतियोगिता'** हेतू प्रविष्टिया आमंत्रित है। सर्वोच्च कहानीकार को २१०००/रुपये प्रदान किया जाएगा। कहॅानियां अधिकतम २००० शब्द तक होनी चाहिए. अपनी एक कहानी, सचित्र जीवन परिचय, टिकट लगे जवाबी लिफाफे व एक पोस्टकार्ड के साथ ३० अक्टूबर २०११ के पूर्व कार्यालय को प्रेषित कर देवें। इस उपरान्त प्राप्त कहानियों पर विचार नहीं किया जाएगा. अपनी कहानियां, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के नीचे दिये पते पर प्रेषित करें.

विशेषः पुरस्कार राशि को कम या अधिक करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा

हिन्दी उदय सम्मान हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. **अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर लिखेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949,

मुक्तक

है पश्चिम की दृष्टि में विश्व बड़ा बाजार
पर भारत तो मानता जग को एक परिवार।
भौतिक वादी मानते धन को प्रमुख प्रधान
किन्तु हमें दिखता बड़ा आध्यात्मिक संसार।
+++++++++++++++++++
जो धनी प्रतिभाओं का है ज्ञान औ विज्ञान में
दी असीमित बुद्धि जिसको कृपाकर भगवान ने।
वह मनुज कमजोर बेहद है प्रकृति के सामने
जो अनेकों करिश्में करती सदा अनजान में।
++++++++++++

किसी को दिखता नहीं अब शासन का डर

हर जगह है अव्यवस्था, हर जगह उत्पात है
राजनैतिक समाजिक परिवेश सब बरबाद है।
ऊपरी सब दिखावे है पर न नैतिकता कहीं
अराजकता बढ़ रही, सद्वृत्ति पर आघात है।।

लोग सब मुश्किल में है, शासन बहुत बीमार है।
लोक व्यवहारों में नैतिक नहीं कोई आधार है।
कहीं अनुशासन न दिखता पंगु है सब कायदे
बेइमानी-घोटालों का जोर पर बाजार है।।२!!

स्वार्थ-फंदो में फंसा मन है घृणित व्यापार में
भर रहे सब अपना घर जो है पद में या अधिकार में।
जो है श्रमजीवी विछल है, बोल तक सकते नहीं
लोकतंत्र के नाम पै यों बढ़ा भ्रष्टाचार है।३।।

किसी को दिखता नहीं अब कहीं भी शासन का डर
बेफिकर मंहगाई पहुंची हिमालय के शिखर पर।
लोगों को मुश्किल गई हों, दो समय की रोटियां
डर तो ये हैं भूखी जनता जाये न दुख में विफर।।४

जरुरी है सोच में अब शीघ्र ऐसी बात हो
जिससे दुख-चिन्ताओं से सबको तुरंत निजात हो।
सही आजादी का मतलब गलत समझा सबों ने
इसी से सच्चों के सिर पर दबंगो के लात जो.

✍**प्रो०सी०बी०श्रीवास्तव,** जबलपुर, म.प्र.

लूट मची है हर तरफ, कैसी है ये होड
मानवता चुप सोचती, आ पहुंची किस मोड
+++++++++++++++++++++++
दुनिया है दोरंगी प्यारे, दुनिया है दोरंगी
राधा-कृष्ण पुजती, पर प्रेमीजन को दे फांसी, रहने को जो स्वर्ग खोजती, पर मरने को काशी।

मो०९३३५१५८९५६

देश भक्ति गीत

जो भी अपने देश की खातिर अपना खून बहायेगा
उसकी याद के गीत जमाना युगो युगों तक गायेगा
जब तक तन में प्राण बहुत मोहक लगता संसार
मानव की अतृप्त पिपासा करती भौतिकता से प्यार
जो भौतिक सुख त्याग वतन पे न्यौछावर हो जायेगा
उसकी याद के गीत जमाना युगो युगो तक गायेगा
अखिल विश्व की तेज निगाहें सुबह शाम झुकती है
अवनि देगी आशीष जिसे अम्बर शीश झुकायेगा
उसकी याद के गीत जमाना युगों युगों तक गायेगा
मातृ भूमि के कण कण से जिसकी गूंजेगी गाथा
केवल गाथा को सुनकर ठनकेगा दुश्मन का माथा
जिसकी वीर कथा पढ़ पढ़कर शत्रु सुमन चढ़ायेगा
उसकी याद के गीत जमाना युगों युगों तक गायेगा
मातृ भूमि से जिस मानव को नहीं तनिक भी प्यार है
उसका जीना मरण यथा है जीवन से धिक्कार है
हो विदेश में या स्वदेश में मातृ भूमि को भूले न
कितना धनी हो कितना मानी अहम हृदय को छूले न
रखे देष के हित में सर्वदा अपने उच्च्व विचार
जब जब हो अनुयायी जिनका झुक जाये संसार
कभी राज न देश का खोलें दुश्मन की ताकत के आगे
अंतिम बूंद रक्त की दे दे, पर न समर भूमि से भागे
राज खोल दें अपने देश का वो सबसे बड़ा गद्दार है
मातृ भूमि से जिस मानव को नहिं तनिक भी प्यार है
उसका जीना मरण यथा है जीवन से धिक्कार है
दुर्दिन में जीवन हो जिसका फिर भी सर्वस्व लुटाये
सुख और चैन वतन को दें दे, अपना शीश कटायें
जर्रे जर्रे को बल दे दो अपने बल को खोकर
अरि मुण्डों की माला पहने हाथ रक्त से धोकर
यश की कामना करें कभी न, निःसंकोच करे कुर्बानी
बच्चा हो तो बचपन भूले, हो जवान तो भूले जवानी
राष्ट्र की खातिर काम न आये, तो जीवन यह निस्सार है
मातृभूमि से जिस मानव को नहीं तनिक भी प्यार है
उसका जीना मरण यथा है जीवन से धिक्कार है

✍**हरिचरण वारिज,** भोपाल, म.प्र.

सुखी वैवाहिक जीवन का राज
खुद को शेर और बीबी को
दुर्गा जी, जय माता दी
विमल कुमार वर्मा, ९४५०४५०२९३

डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा का चिन्तन

०१ बातचीत का माध्यम
कभी बन्द न करें
कितना भी मनमुटाव हो
इस द्वार को खुला रखें

०२ डॉक्टर को गाली
इसलिए मिली
क्योंकि उन्होंने दवा
महंगी लिखी।

०३ वे महान है
महान ही रहेंगे
दूसरों को धकेलकर
वे आगे बढ़ंगे

०४ मौत का गम
घर वालों को कम था
खर्चा अधिक हो गया
इसका अधिक गम था

०५ शिखर पर पहुंचना
मेहनत का काम है
वहां पर बने रहना
सूझ-बूझ का काम है

०६ टेंशन का दौर है
मन में शांति लाइए
कुछ हंसिए कुछ हंसाइए
अधिक उम्र पाइए

++++++++++++++++++++

मै फूलों से

मै फूलों से आखिर समझौता क्यों करूं।
जब शूलों का प्यार मुझे स्वीकार है।।

दुःख के गीतों को गाउं तो दोष दो।
मधुवन पाने ललचाउं तो दोष दो।।
चलने वाला राही तो निर्दोष है।
अगर राह में रूक जाउं तो दोष दो।।

मै फूलों से आखिर समझौता क्यों करूं।
जब मझधारों का ज्वार मुझे स्वीकार है।।

हंसी मिली थी मुझको भी दो चार दिन
कली हंसी थी बगिया में दो चार दिन।।
अंधियारे का तूफान बढ़ा इस जोर से।
हंसी खिली चांदनी रही दो चार दिन।।

मैं शबनम से आखिर समझौता क्यों करूं।
जब अंगारों का भार मुझे स्वीकार है।।

हर चाह यहां विधवा कितनी लाचार है।
नाव भंवर में टूटी सी पतवार है।।
और निराशा के सागर में बाढ़ है।
मिली साथ में तूफानों की मार है।।

मैं खुशियों से आखिर समझौता क्यों करूं।
जब पीड़ाओं का प्यार मुझे स्वीकार है

✍ **सजीवन मयंक,** होशंगाबाद,म.प्र.

राजगुरु की कुण्डलियां

अर्थशास्त्र का अर्थ

धन-दोहन हो गया है अर्थशास्त्र का अर्थ।
ऐन व केन प्रकारेण, सूटें सबल समर्थ।।
सूटे सबल समर्थ, प्रजा की नली तोड़ना।
अर्थशास्त्र का अर्थ, अब केवल धन जोड़ना।
'राजगुरु' किया उलट, प्रणव मुखिया मनमोहन।
धर्म, काम, मोक्षता, कुटिल साधन धन दोहन।

शास्त्रों का राजा हुआ

राजा शास्त्रों का हुआ, मनमोहन का शास्त्र।
मंत्री, संत्री पात्र है, करकट करम, कुपात्र।।
करकट करम कुपात्र, धन्य रे! धन्य जमाने।
अर्थशास्त्र के पेट, सभी शुभ शास्त्र समाने।।
मनमोहन के राज, उठा शास्त्रों का जनाजा।
'राजगुरु' अर्थशास्त्र हुआ शास्त्रों का राजा।।

खत का खतना

खत का खतना कर दिया, मोबाइल चैटिंग
ई-मेल से मेल अब, लुप्त फोन की रिंग।
लुप्त फोन की रिंग, कहां अब पूज्य पिताजी।
सादर चरण स्पर्श, गुम गये, गये गया जी।
पोस्ट-कार्ड, लिफाफा, अन्तरदेशीय आहत।
'राजगुरु' सब खतम, कौन लिखता है अब खत।

आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर 'राजगुरु', सिहोरा, जबलपुर, म.प्र.

++++++++++++++++++++

गुजारिश

१. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़े, बल्कि दूसरे दोस्तों को भी इससे परिचित कराएं.
२. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएं भेजें। उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. बिना उचित टिकट लगे जबाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.
३. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.
४. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.
५.जो रचनाएं आपको अच्छी लगें उसके साथ रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.
६. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 पर बात करें

❑संपादक

सम्मानार्थ प्रविष्टियां आमंत्रित है

शबनम साहित्य परिषद, ढाल की गली, सोजत सिटी-३०६१०४, राजस्थान द्वारा सम्पूर्ण देश के प्रतिभाशाली साहित्यकारों, कवियों एवं लेखकों से वर्ष २०११ के लिए राष्ट्रीय सम्मानार्थ प्रविष्टियां आमंत्रित है. इच्छुक प्रतिभागी अपने श्रेष्ठ कृति/रचना, अपना संक्षिप्त परिचय दो रंगीन फोटो तथा स्वयं के पता युक्त पोस्ट कार्ड के साथ रजिस्ट्रेशन शुल्क २००/रुपये धनादेश के साथ ३० सितम्बर २०११ तक कार्यालय में भेजें.

आध्यात्म

जीवन में आत्म संयम का महत्व

✍डॉ0 गिरीश दत्त शर्मा
प्रभारी शैक्षिक प्रकोष्ठ राजस्थान, ४/८२, चौटाला रोड, वार्ड नं.२३, संगरिया, राजस्थान

मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य एवं सन्तुलन के लिए आत्म संयम जहां दैनिक कृत्यों-आहार-व्यवहार में आवश्यक है. वहां व्यक्तित्व की पहचान, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता के लिए आचरण में भी अपेक्षित है. सामान्यतः व्यक्ति जन्म लेता है, उसका पालन पोषण होता है और घर गृहस्थी में संलिप्त होकर संसार से विदा हो जाता है. बिना किसी जान-पहचान के, बिना किसी प्रतिष्ठा एवं लोक सम्मान के. इस प्रकार के आचरण तो मनुष्येतर प्राणियों में भी मिलते हैं. फिर, मनुष्य के जीवन की अन्य जीव जन्तुओं से भिन्नता एवं सार्थकता ही क्या रह जाती है? इसीलिए कहा गया है कि 'धर्मोहितेषां अधिको विशेषः धर्मेण होनाः पशुभि समानाः अर्थात धर्म (मनवोचित आचरण) के बिना मनुष्य पशुओं के समान हैं. मानव के इस प्रकार के आचरण में आत्म संयम की पग-पग पर आवश्यकता पड़ती हैं. आत्म सयंम मनुष्य में विवेकपूर्ण आचरण को अनुप्राणित करता है जिससे मनुष्य अनावश्यक, अनापेक्षिक एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी तनाव कुण्ठा और विषादपूर्ण स्थिति से उबर जाता है जबकि अविवेकी पुरुष धैर्य की सीमा लांघ कर अपने गलत आचरण एवं व्यवहार के कारण न केवल दुःखद अपमान पूर्ण स्थिति को प्राप्त होते हैं. अपितु उपहास के पात्र भी बनते हैं. ऐसे अवांछित आचरण से वे स्वयं के लिए शत्रुओं और विरोधियों की संख्या ही अधिक बढ़ा लेते हैं. उन्हें इस बात का भान नहीं रहता कि इस संसार में अपने प्रति मान-अपमान, मित्र-शत्रु, सुख-दुःख आदि के लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं. हमारी आत्मा स्वयं हमारी ही शत्रु-मित्र हैं, जैसा कि गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा है-"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत, आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः" अर्थात् मनुष्य यदि अपना उद्धार करना चाहता है तो अपनी आत्मा को (अपने सद् आचरण द्वारा) उठाये, इस अधो गति की ओर न बढ़ने दे क्योंकि यह मनुष्य की अपनी आत्मा ही है जो स्वयं अपनी ही मित्र और अपनी ही शत्रु हैं.

> आत्म सयंम मनुष्य में विवेकपूर्ण आचरण को अनुप्राणित करता है.
> हम अपने सम्मान, स्वार्थ एवं अधिकारों के प्रति इतने जागरुक और संवेदनशील रहते हैं कि जरा सा भी आघात लगने अथवा कार्य में व्यवधान आने पर उत्तेजित हो उठते हैं और प्रतिकार रूप में अवांछित कार्य करने लगते हैं. यही विनाशकारी होता है.

देखने में आता है कि हम अपने सम्मान, स्वार्थ एवं अधिकारों के प्रति इतने जागरुक और संवेदनशील रहते हैं कि जरा सा भी आघात लगने अथवा कार्य में व्यवधान आने पर उत्तेजित हो उठते हैं और प्रतिकार रूप में अनचीन्हें और अवांछित कार्य करने लगते हैं. यहीं से उत्पन्न हो जाता है विरोध, विद्रोह और वैमनस्य जो आगे चलकर एक भयानक रूप धारण कर लेता है. मनुष्य की इस प्रकार की व्यक्तिगत मान्यताएं स्वयं के लिए ही नहीं अपितु समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए विनाशकारी बन जाती हैं जिनके परिणाम विघटनकारी तत्वों के सृजन और युद्धों की विभीषिका रूप में प्रकट होते हैं. आत्म संयम मनुष्य के इस प्रकार के उतावलेपन को रोकता है, विवेकपूर्ण आचरण को प्रेरित करता है तथा दूसरों के साथ 'आत्मवत सर्व भूतेषु' की भावना के अनुशीलन की ओर उन्मुख करता है. इससे न केवल वैमनस्य दूर होता है अपितु शान्ति एवं सद्भावपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है. आत्म संयम हमें दूसरों के प्रति ऐसे आचरण की ओर प्रवृत्त करता है जिसकी अपेक्षा हम दूसरों से अपने प्रति करते हैं. इस प्रकार का आचरण एक आदान-प्रदान का व्यवहारिक रूप है जिसकी प्रगाढ़ता के लिए समभाव अपेक्षित है क्योंकि जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म आदि का भेद तो सामाजिक देन है. आत्मा तो सभी में एक परमात्मा का अंश रूप है फिर मनुष्य के प्रति आचरण में भिन्नता क्यों? भारतीय संस्कृति तो इसी भावना के फलस्वरुप विश्व की अन्य संस्कृतियों में वैशिष्टय रखती हैं. प्रत्येक जीव में समान आत्मा और परमात्मा का अंश मानकर ही वह विश्व को एक कुटुम्ब की भावना से देखती है. उसमें 'यह अपना है यह पराया है' की भावना कहां? क्योंकि 'अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसां उदारचरितानाम् तु बसुधैव कुटुम्बक्' है.

आचरण के साथ-साथ वाणी में आत्म सयंम बनाये रखने की आवश्यकता पड़ती है. हमारे मुख से उच्चरित शब्द यद्यपि निर्जीव एवं निश्चेतन लगते हैं परन्तु उनमें जो शक्ति, सामर्थ्य एवं

प्रभाव निहित हैं. वह बड़े-बड़े घातक अस्त-शस्त्रों की सामर्थ्य से बाहर है. घातक अस्त्र-शस्त्र की चोट व्यक्ति आसानी से झेल लेता है. बड़े बड़े घात भी समय पाकर भर जाते हैं परन्तु शब्द बाण के नुकीले प्रहार इतने घातक और गहरे होते हैं कि व्यक्ति जीवन भर सालते रहते हैं. इनसे उत्पन्न वैमनस्य, शत्रुता, बदले की भावना पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है और विनाश का मार्ग प्रशस्त हो जाता है. बड़े बड़े युद्ध इसी के परिणाम रहे हैं. इसीलिए महापुरुषों ने सुझाव दिया है कि 'ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय, औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय'. आत्म सयंम के अभाव में अपना विवेक भूल कर मनुष्य कभी-कभी आवेशपूर्ण अवस्था में अनेक ऐसे कृत्य कर बैठता है जो दूसरों को उत्तेजित करने में अग्नि में घी आहुति का काम करते हुए उसे घातक से घातक कार्य करने की स्थिति में ला देते हैं. ऐसी स्थिति में यदि दूसरा पक्ष धैर्य एवं संयम से काम ले तो, 'तनिक शीत जल से मिटे जैसे दूध उफान' की भांति आवेशपूर्ण विद्रोहात्मक स्थिति को आसानी से रोक सकता हैं.

दूसरों के साथ सामान्य रूप से बात चीत करते समय भी हमें अपने आत्म संयम का ध्यान रखना चाहिए. जहां तक हो सके कम बोलें. इससे एक ओर बोलने में जो शक्ति खर्च होती है उसकी बचत होगी. दूसरे, अनर्गल, बेमानी बातों से बचाव होगा तथा बातचीत में एक गाम्भीर्य बना रहेगा. बात करते समय हमें मात्र कम बोलनाा ही समीचीन नहीं है अपितु शब्दों को तोलकर उनके स्वरुप अर्थ व्याख्या तथा अवसर के अनुकूल बोलना चाहिए. इससे न केवल आपकी बात का बजन बढ़ेगा अपितु आपका व्यक्तित्व भी प्रभावी बनेगा.

हमें अपनी वाणी पर भी आत्म सयंम बनाये रखने की आवश्यकता हैं. शब्द बाण के नुकीले प्रहार इतने घातक और गहरे होते हैं कि व्यक्ति जीवन भर सालते रहते हैं.

सत्य का अनुशीलन व्यक्ति की चरित्रिक दृढ़ता एवं संयम का परिचायक है परन्तु सत्य का आचरण तभी तक उपादेय है जब तक उससे किसी पक्ष को हानि अथवा कष्ट नहीं पहुंचता अन्यथा उसका प्रभाव विपरीतार्थक होगा. भारतीय संस्कृति भी यही कहती है-'सत्यं ब्रयात, प्रियम् ब्रयता, न ब्रयात सत्यमप्रियम' अर्थात सत्य बोलो, प्रिय बोलो, परन्तु ऐसा सत्य कभी न बोलो जो दूसरों को अप्रिय हैं. अतः सत्य का अनुशीलन करते समय जब कभी कटु सत्य की अभिव्यक्ति की आवश्यकता हो आत्म संयम का अनुगमन करते हुए उसका प्रस्तुतीकरण इस प्रकार से करना चाहिए जिससे व्यक्ति को आत्मिक पीड़ा न पहुंचे.

इस प्रकार यदि हम अपने आचरण, व्यवहार, कृत्य, भावना और मन में आत्म संयम का भाव बनाये रखें, उसका अनुशीलतन करें तब अनेक आपदाओं-विपदाओं और विषम परिस्थितियों से बचा सकता है. ऐसे आचरण वाला व्यक्ति स्वयं के लिए तो लाभकारी होगा ही समाज में भी लोकप्रिय एवं आदर्श रूप में मान्य हो सकता है.

मानद उपाधियों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

अहिन्दी भाषी देशों व राज्यों के लिएः-

०१ हिन्दी रत्न-११०००रुपये, ०२ हिन्दी गौरव-५१००/-रुपये ०३ हिन्दी श्री-२५००/-रुपये

हिन्दी भाषी राज्यों के लिए :-

०१ हिन्दी भाषा रत्न- ११०००/-रुपये, **०२ हिन्दी भाषा गौरव** - ५१००/-रुपये,
०३ हिन्दी भाषा श्री- २५००/-रुपये,
विस्तृत जानकारी व आवेदन के लिए जवाबी टिकट लगे जबाबी लिफाफे के साथ लिखें:-

सचिव,
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उत्तर प्रदेश,
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कहानी

साहब का कुत्ता

डॉ. प्रद्युम्न भल्ला,
कैथल, हरियाणा

किशन सिंह साहब की आवाज पूरी कोठी में गूंजती है.

'आया साहब' दूर कपड़े धोते किशन सिंह की आवाज आती है.

'कुत्ते के खाने का समय हो गया है, उसे खाना दे दो.'

साहब आदेश दे देते हैं. साहब आदेश देने के आदी हैं. मजाक नहीं है, वे अधिकारी है. उनकी आधी से ज्यादा जिन्दगी आदेश देने में ही गुजरी है. दफ्तर में अपने मातहतों को, घर में नौकरों को, पत्नी को, बच्चों को आदेश वे ही देते हैं. यह अलग बात है कि अलग-अलग जगहों पर मौके, माहौल के मुताबिक उनके स्वर भी अलग- अलग होते हैं.

मसलन पत्नी को आदेश देते समय उनका स्वर कभी ऊंचा, कभी नीचा होता है. बच्चों को आदेश देते समय उनके स्वर में अत्यधिक कोमलता होती है. वे बीच-बीच में हंस भी पड़ते हैं. मगर दफ्तर में वे गम्भीरता और सख्ती का आवरण ओढ़ लेते हैं जो कि वहां चाहिए भी, वैसे तो उनके पद में ही बहुत कुछ है, कुछ उनका अपना भ्ज्ञी रौबदाब है कुल मिलाकर न्यायाधीश को न्यायाधीश लगान ही चाहिए.' उक्ति में उनका विश्वास अड़िग हैं.

हर रोज ही उनका घर भी कचहरी बन जाता है. साहब के कार्यक्रम भी मशीन जैसे हैं. समय पर जागना, समय पर सोना, घूमना, खाना डिक्टेशन, फोन करना. सब कामों के साहब के समय नियत हैं. कभी-कभी किशन सिंह को साहब का चेहरा, हाथ-पैर, दिमाग सब कुछ भी मशीनी ही लगता है. उनकी आवाज भी जैसे मशीन से घरघराती हुई सी निकलती है.

पांच साल से किशन सिंह साहब के साथ हैं. इस बीच दो बार साहब का ट्रासफर भी हुआ है. मगर साहब ने कभी उसे अलग नहीं किया. इधर साहब का तबादला हुआ, उधर 'अपने प्रभाव' से साहब ने किशन सिंह का तबादला भी अपने साथ करवा लिया.

कभी-कभी तो साथ के कर्मचारी उसे कहते भी थे 'किशन सिंह तुम्हारे तो मजे हैं, साहब की कोठी में रहते हो. भई किशना भी तो साहब है.'

ऐसे मौकों पर किशन के भीतर अभिमान भर जाता और वह गुब्बारे की तरह फूल जाता. कभी-कभी वह बाजार से सामान लेने जाता तो दुकानदार

उसे विशेष सम्मान देते. वह भी रौ में बह जाता. 'अरे करवा देंगें तुम्हारा यह काम, घबराते क्यों हो?'

'अरे साहब अपने घर के आदमी है, बहुत मानते हैं अपनी, अरे भैया, सारा घर मुझे सौंप कर कई-कई दिन के लिए चले जाते हैं. साहब, अब इससे ज्यादा और क्या भरोसा करेंगें, हुए न हम उनके खास आदमी?'

लोग हामी भरते मगर एकाध ऐसा भी होता तो बोल ही पड़ता, 'अरे क्या समझते हैं तुम्हें वो, महज एक नौकर, सारा दिन पसीना बहाते हो उनके लिए और देते क्या हैं. बदले में दो रोटी ही तो?' पीठ पीछे किशन ने कई बार सुना है कि लोग उसे साहिब का कुत्ता भी कहते हैं. पर वह हंस देता है. मन ही मन में कहता-'कुत्ते से वफादार कोई जीवन है क्या?'

मगर किशन सिंह को याद है कि बीबी जी उससे कैसे बोलती है? किशु बेटा, खाना खाया या नहीं तुमने, जी वो-मैं कपड़े.....ओफ हो, कपड़े बाद में धूल जाएंगे. जाओ पहले जाकर खाना खा लो. वह पिघल जाता. खाना खाकर फिर काम में जुट जाता. कई बार तो रात के बारह जाते उसे काम समेटते हुए.

पहले-पहले उसे अच्छा लगता था. घर के हर सदस्य की जरुरत का ध्यान रखना. 'किशन, तुम हमारी बहुत सेवा करते हो, कभी-कभी साहब उसे कहते आज की दुनिया में तुम जैसे ईमानदार मेहनती, भरोसेमंद आदमी कहां मिलते हैं'

'आप भी तो हमारे माई-बाप है हजूर, जनाब भी तो मेरा पूरा ध्यान रखते हैं, सच तो ये हैं जनाब मैंने कभी भी यह सोचकर काम नहीं किया कि मैं पराए घर में हूं.' किशन सिंह कहता, उसने भी पंद्रह बरस की नौकरी में कई साहब देखे थे.

ऐसे साहब जो नाक पर मक्खी भी बैठने ना देते थे. ऐसे साहब जो राजनीतिज्ञों के सामने गिड़गिड़ाते थे. ऐसे साहब जो टूट सकते थे, मगर गलत काम नहीं करते थे. ऐसे साहब जो गलत और केवल गलत काम ही करते थे. ऐसे साहब जो लालच, लोलुपता, वासना के कीड़े थे, मगर फिर भी जीते थे.

किशन सिंह ने वहां भी निभाई थी और यहां भी निभा रहा था. साहब उसे कई बार रिश्तेदारों के यहां भी भेज देते थे. वह वहां भी कड़ी मेहनत से काम करता था. मन में एक ही बात रखे कि साहब को कोई यह ना कहे कि कैसा व्यक्ति भेजा है? 'साहब ही इज्जत में ही अपनी इज्जत है और साहब की बेइज्जती में अपनी बेइज्जती. ' यह बात उसके पिता ने उसे नौकरी पर जाने के पहले ही दिन समझाई थी जिसे उसने गांठ बांध लिया था.

'आज कल्पना जी आ रही है, बेचारी बड़ी दुखी है, पति की मौत के बाद उसका है ही कौन? यहां किसी काम के सिलसिले में आ रही है.'

साहब की आवाज उसके कान में पड़ती है. वे बीबी जी को बता रहे हैं.

'यही वही है ना, आपके मित्र की पत्नी, एक बार पहले भी आई थी.' बीबी जी पूछती है शंकालू से स्वर में.

'हां, हां, वहीं देखो, उसके रहने, खाने-पीने का इन्तजाम...'

'ठीक है, हो जाएगा.' बीबी जी कहती है.

किशु को कहकर गेस्ट रुम खुलवा दिया है. सफाई करवा कर चादरें बदलवा दी हैं. वह पहले इन कल्पना जी को कभी नहीं मिला. यूं भी बड़े लोग हैं, सौ रिश्तेदार आते जाते रहते हैं उसे क्या लेना-देना हैं?

कल्पना जी आ गई है. निहायत सादा मगर सुन्दर कपड़ो में लिपटी देवी सी, पता लगा कि किसी साक्षात्कार के सिलसिले में यहां आई है. चार दिन ठहरेंगी. बच्चे दो हैं. दोनों बाहर हॉस्टल में पढ़ते हैं.

पहले ही दिन काफी गहमा-गहमी रही. साहब की पसंद का खाना बना. देर रात साढ़े ग्यारह बने तक साहब, बीबी जी व कल्पना जी गप्पे मारते रहें. सर्दी के दिन थे उसे बैठे-बैठे झपकी सी आजाती.

आखिर खाना समेटते बारह बज ही गए. खा पीकर वे लोग सोने गए तो किशन सिंह भी थक-टूट कर अपने कमरे में आ गया. ऐसे मौंको पर कई बार उसे घर की याद भी आ जाती थी. हालांकि साल में दो बार वह घर जाता था. मगर फिर भी याद में उसके बच्चे, पत्नी, अक्सर आ जाते थे.

और दिन उसे लेटते ही नींद आ जाती थी. मगर आज थके होने के बावजूद उसे नींद नहीं आ रही थी. उसने घड़ी पर नजर डाली एक बज रहा था. अचानक उसे ध्यान आया कि साहब ने कल्पना जी के कमरे में पानी रखने को कहा था. एक बज चुका था. वह जाए या ना जाए. वह सोच में पड़ गया.

न मालूम कैसा स्वभाव हो. रात को किसी गैर औरत के कमरे में यूं जाना उसे नागवार गुजरा मगर साहब का आदेश भी था. वह पानी का जग और गिलास ले गेस्ट रुम की ओर चल पड़ा. उसने गेस्ट रुम पर नजर दौड़ाई. कमरे में हल्की रोशनी थी. अचानक उसे साहब आते दिखे. वह चौक गया. साहब इस वक्त और यहां, 'सोने के बाद तो साहब कभी उठते न थे मगर यह क्या' साहब की नजर उस पर पड़े इससे पहले ही वह ओट में दुबक गया.

साहब ने दो बार दरवाजे पर दस्तक दी. दरवाजा खुला और वे भीतर प्रवेश कर गए. किशन सिंह को ऊपर से नीचे तक पसीना आा गया. क्या साहब और कल्पना मेम साहब. उसके पूरे शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गई. नहीं-नहीं, साहब ऐसे नहीं हो सकते. उसका दिल व दिमाग इस बात को मानने को तैयार नहीं थे मगर आंखों ने तो सब कुछ देखा ही था वह आंखों को कैसे झुठलाता? क्या वह साहब को नहीं पहचानता था?

वह दबे पांव आगे बढ़ा. गेस्ट रुम के पास पहुंच कर उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा. उसने कान खिड़की से लगा दिए. संयोग से एक परदा खुला था. वहां से उसने स्वयं को छुपाते हुए भीतर झांका तो वह सन्न रह गया.

कल्पना मेम साहब, साहब की बाहें में थी और साहब उसे बेतहाशा चूम रहे थे. वह खड़ा न रह सका. सर को थाम कर वह बैठ गया. फिर चुपचाप उठकर अपने कमरे में आ गया. बिस्तर पर लेट कर वह गहराई से सोचने लगा. नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी. क्या साहब इतना गिर सकते हैं. मित्र की पत्नी.

......

तीन साल पहले का एक दृश्य उसके दिमाग में कौंध गया. उसकी नई-नई शादी हुई थी. शादी के लिए साहब से छुट्टियां ले वह अपने देस चला गया था. अपने पिता व पत्नी को लेकर वह वापिस लौटा था. एक सप्ताह तक उसके पिता व पत्नी वहीं रहे थे. इसी तरह एक बार जब वह पार्टी खत्म होने के बाद बर्तन समेट कर लौट रहा था तो साहब को अपने क्वाटर के बाहर से जाते दिखे थे. कुछ सोचकर उसने उन्हें रोका नहीं था. शायद मेहमानों को विदा करके लौट रहे हों. साहब के घर से अपने देस लौटते हुए उसके पिता को साहब ने पांच हजार रुपये भी दिए थे. साहब से पहली बार मिलते हुए पत्नी ने उनके पांव छुए थे मगर जाती बार उसने ऐसा नहीं किया. यह बात उसे नागवार भी गुजरी थी मगर वह कुछ बोल न सका था.'

साहब ने ही कहा था, 'किशन सिंह, फिर लाना अगली छुट्टियों में पत्नी को. मगर हां, एक सप्ताह के लिए नहीं, एक महीने के लिए.' और साहब ने उसे एक साड़ी भी दी थी. वह

पांच साल से किशन सिंह साहब के साथ हैं. इस बीच दो बार साहब का ट्रासफर भी हुआ है. मगर साहब ने कभी उसे अलग नहीं किया.

पीठ पीछे किशन ने कई बार सुना है कि लोग उसे साहिब का कुत्ता भी कहते हैं. पर वह हंस देता है.

'किशन, तुम हमारी बहुत सेवा करते हो, कभी-कभी साहब उसे कहते आज की दुनिया में तुम जैसे ईमानदार मेहनती, भरोसेमंद आदमी कहां मिलते हैं'

भीतर ही भीतर कितना गर्व महसूस कर रहा था. कितना चाहते हैं साहब उसे. मगर पत्नी की आंखों में उसे बजाय श्रद्धा, आभार के नफरत व तिरस्कार नजर आया था. जाते वक्त वह साड़ी भी वहीं छोड़ गई थी. यह बात उसे कई दिनों बाद ध्यान में आई थी जब वह एक दिन संदूक खोल रहा था.

उसकी मुट्ठियां भींच गई. नसें फड़कने लगी. खून खौलने लगा. वह सारी रात करवटें बदलता रहा. उसे एक पल भी नींद नहीं आई. वह काम करे या ना करे इसी उधेड़ बुन में रहा. सुबह उसे नींद आई और खुली कब उसकी नींद, जब उसे दरवाजा पीटने की आवाज सुनाई दी.

ओह-उसने दरवाजा खोला, धूप की किरणों उसके चेहरे से टकराई व उसकी आंखे मिचमिचा रही थी. बाहर महरी थी.

'मेम साहब, बुला रही हैं. आज उठना नहीं है क्या?' वह उठकर चल दिया. काम में जुट गया. उसे साहब के व्यवहार में रत्तीभर भी परिवर्तन नजर नहीं आया था. वहीं रोजमर्रा के काम.

दोपहर को टाईगर को खाना देने गया तो वह गुर्राने लगा. तभी बीबी जी की आवाज आई, 'किशन, इसके पास मत जाना वह पागल हो गया लगता है. ' वह लौट आया. टाईगर अब भी गुर्रा रहा था. उसे लगने लगा कि लोग कैसे-कैसे चेहरे ओढ़े रहते हैं. लोगों के सामने दया, धर्म, त्याग की मूर्ति लगने वाले साहब आज पिशाच,

अधम, नीच लग रहे थे. उसे एक दो बार यह बात दफ्तर में भी सुनने को मिली थी. मगर उसने ध्यान नहीं दिया था. यह सब मन का कमाल है. श्रद्धा होती है तो अविश्वास का कोई कारण ही नहीं होता. विश्वास होता है तो अन्धा होता है. उसमें कम या ज्यादा क्या. वह तो साहब को बाप मानता रहा और साहब...छीः.

तीसरी रात भी वही खेल दोहराया गया. क्या वह मेम साहब को बताए. ..नहीं, उससे क्या होगा, वह एक पतिव्रता स्त्री के विश्वास और भरम को तोड़ना नहीं चाहता था. पतिव्रता.. हां कौन जाने वह भी साहब की तरह. उसने सर को झटक दिया. उसे फिर अपनी पत्नी की याद हो आई. उसका मन किया कि वह उड़कर वहां पहुंच जाए.

'क्या नहीं किया उसने साहब के लिए, वह पसीना बहा-बहा कर साहब के घर की रौनक सींचता रहा, अपनी जिन्दगी का बेहतरीन हिस्सा उसने साहब के घर की खुशियों में स्वाहा कर दिया. दूर देस का छोटा-सा घर और जमीन की याद ने उसे बेचैन कर दिया.

'किशन सिंह, टाईगर को जहर दे देना, अब यह पागल हो गया है, किसी को भी काट सकता है.' साहब ने घर में घुसते ही कहा.

'जी साहब' कहकर वह टाईगर के बारें में सोचने लगा. वह कितना वफादार था इस घर के प्रति. सारी रात जागता था वह ताकि घर के लोग चैन की नींद सो सकें और आज वह पागल हो गया था तो उसका इनाम था मौत 'वाह! साहब' उसने दीवार पर घूंसा मारा.

आज अंतिम रात थी. सुबह कल्पना जी को जाना था. 'किशन सिंह, टाईगर को जहर दिया या नहीं.' साहब ने पूछा.

'आज दूंगा साहब' कहते हुए किशन ने साहब को गहरी नज़र से देखा.

क्या बात है? साहब के माथे पर पसीना आ गया. न जाने उस नज़र में क्या था..

'कुछ नहीं साहब, सोचता हूं आदमी भी क्या चीज है?'

साहब कुछ देर किशन को असमंजसी निगाहों से देखते रहे और फिर चले गये. किशन के हाथ में साहिब का दिया ज़हर था. वह उसे टाईगर के खाने में डालने ही लगा था कि उसका हाथ रुक गया. उसे याद आया 'टाईगर' यानि साहब का कुत्ता. फिर उसे याद आया लोग उसे भीतो साहिब का कुत्ता.

किशन के चेहरे की नसें खिंचने लगी-फिर उसे अपनी पत्नी का हिकारत भरा चेहरा याद आया. उसने जहर साहिब के दूध में मिला दिया तथा चुपचाप साहिब के सिरहाने रख आया.

इससे पहले कि घर जागता किशन अपना सामान लेकर स्टेशन की ओर निकल चुका था.

> कशन को थके होने के बावजूद नींद नहीं आ रही थी. रात के एक बज रहे थे. अचानक उसे ध्यान आया कि साहब ने कल्पना जी के कमरे में पानी रखने को कहा था. वह जाए या ना जाए. वह पानी लेकर गेस्ट रुम की ओर चल पड़ा. अचानक उसे साहब आते दिखे. वह चौक गया. वह दबे पांव आगे बढ़ा, उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा. उसने स्वयं को छुपाते हुए भीतर झांका तो वह सन्न रह गया. कल्पना मेम साहब, साहब की बाहें में थी और साहब .... अचानक उसे तीन साल पहले की याद आयी. उसकी नई-नई शादी हुई थी. मेरी पत्नी साथ ही आयी थी. साहब से पहली बार मिलते हुए पत्नी ने उनके पांव छुए थे मगर जाती बार उसने ऐसा नहीं किया. साहब उसे एक साड़ी भी दिए थे. मगर पत्नी की आंखों में उसे बजाय श्रद्धा, आभार के नफरत व तिरस्कार नजर आया था.

एन.एम.एफ.आई.एवार्ड-२०११ सम्पन्न

न्यूजपेपर्स एंड मैगजीन्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया का द्वितीय राष्ट्रीय वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह का शुभारम्भ गायिका संगीता ढौंडियाल, अरुणिमा मिश्रा, सुशील ठाकुर, प्रमोद सिंह के गायन से हुआ. कार्यक्रम के मुख्यअतिथि सीसीवीओ एवं वरिष्ठ पत्रकार उमेश चन्द्र गौड़ ने पत्रकारिता एवं समाचार पत्र-पत्रिकाओं की समस्याओं के समाधान हेतु एकजुट होने का आहवाहन किया. वरिष्ठ पत्रकार डॉ. आर.के.वर्मा ने फिल्म एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्तराखंड में अपार सम्भावनाएं बताते हुए राज्य सरकार व सूचना निदेशालय से ध्यान देने को कहा. विभिन्न राज्यों से आये पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों, स्वामियों ने अपने विचार एवं समस्याएं रक्खी.

फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रवि रस्तोगी ने फेडरेशन की उपलब्धियां बताते हुए निम्न मुख्य मांगे रक्खी. जिसमें सभी समाचार पत्र/पत्रिकाओं के सम्पादकों/प्रकाशकों को परिचय पत्र जारी करने, पत्रकार सुरक्षा कानून बनाने, स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक पत्रकार सुरक्षा प्रकोष्ठ पुलिस थानों में खोलने, डीएवीपी व राज्य सरकारों से मान्यता प्राप्त पत्र-पत्रिकाओं को वर्ष में कम से कम एक लाख रुपये के विज्ञापन अवश्य दिये जाने, १० हजार से कम प्रसार वाले पत्र/पत्रिकाओं को कमीशन से मुक्त करने, राष्ट्रीयकृत बैंको में जीरो बैंलेस से सेविंग खाता खोलने, पी.आर.वी.एक्ट में संशोधन कर छोटे समाचार पत्र/पत्रिकाओं के हितों व अधिकारों का ध्यान रखने की गई.

सम्मान समारोह में यू.सी.गौड़, पं. विपिन पाराशर, डॉ.आर.के.वर्मा, आर.पी.डोभाल, को एन.एम.एफ.आई एवार्ड राज्यमंत्री दर्जाधारी संदीप गुप्ता द्वारा प्रदान किया गया. इसके अतिरिक्त संगीता ढौलियाल, सुशील ठाकुर, प्रमोद सिंह, टी.सी.मलिक, केसर सिंह आजा, ठाकुर मनोज कुमार, के.पी.ढौलियाल, एन.के.शर्मा, एस.एल.व्यास, ओम सुरती, लोकेन्द्र, रोहितास पंवार, ज्ञानेन्द्र मिश्रा, अरुणिमा मिश्रा, रामदेव मिश्रा, राधेश्याम, वसन्त कश्यप, रवि शर्मा, ओम प्रकाश टैगोर, ऋषिराम, राम प्रकाश पांडे, रोशन लाल भट्ट मुख्य थे.

कक्का की 'अक्ल बड़ी या भैंस' लोकार्पित

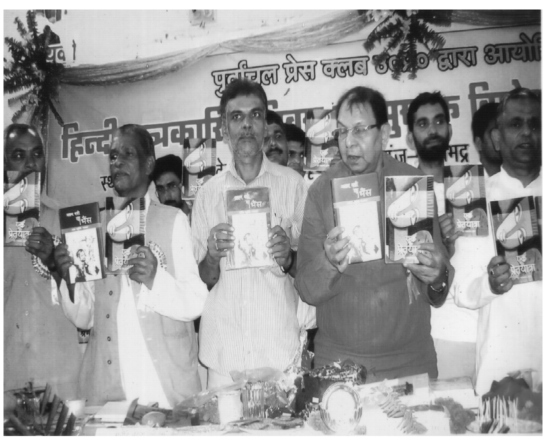

सोनभद्र मुख्यालय के स्वामी विवेकानन्द प्रेक्षागृह में सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य के हस्ताक्षर अजय चतुर्वेदी 'कक्का' के हास्य-व्यंग्य लेख संग्रह 'अक्ल बड़ी या भैस' का लोकार्पण माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० अच्युतानंद मिश्र द्वारा किया गया. समारोह की अध्यक्षता कर रहे डॉ० मिश्र ने कहा-'कक्का के लेखों के इस संकलन में गहरा और तीखा व्यंग्य है. समाज की विसंगतियों पर चुटीली टिप्पणियां हैं. ये आज भी पूरी तरह प्रासंगिक और सामयिक है. उनकी धार और तेवर बनी रहे, बढ़ती रहे, यही शुभकामना.'

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रुप में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता संस्थान के निदेशक डॉ० राम मोहन पाठक थे तथा मंचासीन मुनीर बख्श आलम, अजय शेखर, रामनाथ शिवेन्द्र, रमा शंकर पाण्डेय विकल, श्याम नारायण लाल श्रीवास्तव एवं राजीव ओझा थे.

'जतन से ओढ़ी चदरिया' का लोकार्पण

दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा डॉ० ए.कीर्तिवर्द्धन की पुस्तक 'जतन से ओढ़ी चदरिया' का लोकार्पण हिन्दी भवन में समाज सेवी श्रीमती किरणा चोपड़ा द्वारा किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता सम्मेलन के अध्यक्ष एवं पूर्व महापौर श्री महेश चन्द्र शर्मा ने की. वक्ता के रुप में डॉ० हरिपाल सिंह, श्रीमती इन्दिरा मोहन एवं डॉ० रामगोपाल वर्मा थे एवं संचालन डॉ० रवि शर्मा ने किया.

श्री महेश चन्द्र शर्मा ने कहा-'पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव और एकल परिवार के कारण आज समाज में वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं. इस पुस्तक में डॉ० ए.कीर्तिवर्द्धन ने इस समस्या को अपनी पुस्तक में उजागर किया है.

मुख्य अतिथि श्रीमती किरण चोपड़ा ने कहा-'बुजुर्ग होना एक सौभाग्य की बात है. बुजुर्ग हमारे ग्रंथ के रूप में होते हैं जिनके अनुभवों को सुनकर हम अपने जीवन को संस्कारी बनाकर प्रगति पथ पर लगा सकते हैं.

इस अवसर पर इन्दिरा मोहन, डॉ. हरिपाल सिंह, डॉ. रामगोपाल वर्मा ने विचार व्यक्त किए और लाल नारायण खण्डेलवाल, श्री अरुण बर्मन, श्री श्याम सुन्दर, श्री सुरेश

खण्डेलवाल, श्री एस.पी.सिंह, श्री ओम प्रकाश, अनमोल आदि उपस्थित थे.

डॉ० वली उल्लाह को 'गोल्ड मेडल फार इंडिया'

अजमेर, राजस्थान के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कई संस्थाओं से सम्मानित डॉ० वली उल्लाह खां फरोग को ए.बी.आई अमेरिका (अन्तरराष्ट्रीय संस्था) ने शान्ति और विश्व बंधुत्व के लिए गए प्रयास, सफलता और समाज निर्माण में योगदान के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर 'गोल्ड मेडल फॉर इंडिया' से नवाज़ा हैं. पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

विश्व स्नेह समाज व विहिसा को सम्मान

एन.एम.एफ.आई.एवार्ड-२०११ के द्वितीय वर्षगांठ के अवसर पर विश्व स्नेह समाज मा० एवं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान को पत्रकारिता एवं साहित्य के क्षेत्र में की गई उत्कृष्ट सेवाओं, सराहनीय योगदान, उत्थान हेतु सम्मानित किया गया. इस हेतु पत्रिका परिवार ने राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० रवि रस्तोगी को बधाई दी.

श्रीकान्त वर्मा स्मृति रचना शिविर सम्पन्न

कोरबा, छत्तीसगढ़. में प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान, छ.ग. द्वारा तीन दिवसीय रचना शिविर का आयोजन किया गया. जिसमें श्रीनंद किशोर आचार्य-जयपुर, जनाब शील काफ निजाम-जोधपुर, श्री प्रभात त्रिपाठी-रयगढ़, श्री राम परिहार एवं श्री प्रतापराव कदम-खंडवा, डॉ. दिविश रमेश एवं सुश्री वाजदाखान-दिल्ली, श्री प्रफुल्ल कोलख्यान तथा श्री अरुण होता-कोलकाता, डॉ. बृजलाल सिंह-बनारस आदि रक्ष विशेषज्ञों की सशक्त भागीदारी रही. शिविर में २५० नये, पुराने क्रियाशील रचनाकारों ने भाग लिया. इस अवसर पर श्री विश्वरंजन, डॉ. बलदेव, शंभुलाल शर्मा, रविन्द्र सरकार, लोकनाथ साहू, सुश्री अरुणा चौहान की कृतियों सहित संस्थान की त्रै०पत्रिका 'पांडुलिपि का विमोचन हुआ. प्रेक्षक के रुप में किसान दिवान, श्री शेर सिंह गोड़िया सहभागी रहे. आयोजन में जय प्रकाश मानस, चित्त रंजन कर, डॉ. सुशील त्रिवेदी, डॉ० सुधीर शर्मा, डॉ.कल्याणी वर्मा, डॉ. मार्णिक लाल विश्वकर्मा, श्री दीपक पाचपोर, डॉ. संध्यारानी, गीता विश्वकर्मा, मुमताज, रवि श्रीवास्तव रहे.

अगली सर्वदलीय बैठक तिहाड़ जेल में आयोजित की जायेगी. उक्त जानकारी सर्वदलीय बैठक आयोजन समिति के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष दाउजी ने दी. साथ ही सभी दलों के नेताओं को अधिकाधिक संख्या में शरीक होने की अपील भी की.

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान का द्वितीय साहित्य यात्रा-११ सम्पन्न

देवरिया, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत २३ से ३० सितम्बर११ तक द्वितीय साहित्य यात्रा-११ में एक कार्यशाला आयोजन किया गया. कार्यशाला में करीब २०० युवा रचनाकारों ने अपनी सहभागिता निभाई. जिसमें रचनाकारों को काव्य, गद्य, दोहा, छन्द, कहानी, नाटक लेखन की विधाओं व उसके बारिकियों से अवगत कराया गया. युवाओं को कार्यशाला में प्रशिक्षण देने के लिए स्थानीय इंटर कॉलेजों व महाविद्यालयों के हिन्दी प्रवक्ताओं क्रमशः गणेश प्रसाद मिश्र, डॉ.वी.पी.उपाध्याय, डॉ० उपेन्द्र श्रीवास्तव, कृष्णा शंकर तिवारी ने हिन्दी की बारिकियों से अवगत कराया. कार्यशाला के समापन के अवसर पर संस्था के सचिव व मीडिया फोरम ऑफ इंडिया सोसायटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा-'आज हिन्दी की उपेक्षा हो रही है. सरकारी व निजी कम्पनियों के सभी आवश्यक दस्तावेज अंग्रेजी के छोटे अक्षरों में लिखे होते हैं. ताकि आम आदमी पढ़ व समझ न सके. संस्थान इसके लिए केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों व निजी कम्पनियों के प्रमुखों से जानकारी एकत्र कर रहा हैं. शीघ्र ही संस्थान इन सुचनाओं के माध्यम से पत्र तैयार कर सरकारों व सांसदों को इसके खिलाफ आवाज उठाने व आवश्यक कार्यवाही करने को लिखेगा. हिन्दी का विकास हिन्दी दिवस मनाने से नहीं, बल्कि इसके लिए लड़ाई लड़नी होगी. जब तक भारत के समस्त दस्तावेज हिन्दी में नहीं होते तब तक भ्रष्टाचार, भाषावाद को झगड़ा चलता रहेगा. अंग्रेजी में लिखे दस्तावेज के कारण ही कार्यालयों में बाबू आम आदमी को बेवकूफ बनाकर पैसा ऐठते हैं. मैं इस कार्यशाला में उपस्थित सभी हिन्दी प्रवक्ताओं का आभारी हूं जिन्होंने अपना कीमती समय निकालकर संस्थान के इस कार्यक्रम को सफल बनाने में हमारी मदद की. साथ ही संस्थान के युवा सदस्यों जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्ति भूमिका अदा उनका आभारी हूं. डॉ०द्विवेदी ने सभी प्रवक्ताओं व प्रतिभागियों को प्रशस्ति-पत्र व लेखन सामग्री प्रदान की. मीडिया फोरम ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र कुमार अग्रवाल ने फोरम की तरफ से सभी प्रतिभागियों व हिन्दी प्रवक्ताओं को बैग, स्मृति चिन्ह प्रदान किया.

इस कार्यशाला को आयोजित करने में स्थानीय युवा सदस्यों गिरिराज दूबे, नित्यानंद सिंह, पवन कुमार, सुधाकर, दिवाकर, करुणेश ने अपनी महत्ति भूमिका निभाई.

पाठकों की पाती

यथा नाम तथा गुणों से सम्पन्न है पत्रिका

पत्रिका का अंक मिला. यथा नाम तथा गुणों से सम्पन्न इस पत्रिका में जो भी लेख पढ़े वे सभी विश्व बन्धुत्व की स्नेह भावना पूर्वक हैं. प्रत्येक लेख जनमत को एक चिन्तन मनन के लिए अनुप्रेरित करते हैं. साथ ही एक दिशा निर्देश भी दे रहा है कि वर्तमान समय में हमारे देश की क्या स्थिति हैं और यह स्थिति किस विचारधारा से ग्रसित होकर अपने संस्कार और संस्कृति को भूलता जा रहा है. विशेषतः युवा वर्ग में मानसिकता बिगड़ रही है, देश के प्रति जो जागरुकता निष्ठा देश भक्ति, समर्पण भाव होने चाहिए वे नहीं है खेद हैं. 'हिन्दुस्तान का मुसलमान किधर' लेख में आपने स्पष्ट लिखा है कि 'धर्म निरपेक्षी बेइमान कहते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता परन्तु सच्चाई यह है कि आतंक धर्म के नाम पर ही फल फूल रहा है. आतंकियों को तालीम मदरसों में दी जाती है. आगे भी आपने वर्तमान कालिक 'भारत में आतंकवादियों की पूर्ण गतिविधियों का समाकलन करके सिद्ध किया है मुसलमान आतंकी क्यों बनते हैं. इंग्लैड के एक विद्वान के अनुसार प्रत्येक मुसलमान कुरान पर विश्वास करता है, जिसमें लिखा है कि 'काफिर' गैर मुस्लिम तुम्हारे खुले दुश्मन है. अतः इन्हें जहां भी पाओ कत्ल कर दो. इस प्रकार की २४ आयतें कुरान में हैं, मारे गये तो स्वर्ग मिलेगा, जहां सुन्दर परिया मिलेगी, स्वागत के लिए. ये आयते कितनी विभ्रमित करने वाली और धर्म विध्वंस करती हैं. ये सब आतंकवादियों के मानस पटल पर मदरसों में ही बैठा दी जाती है.

यह सब अपने भारत में ही हो तो हो रहा है. अन्य देशों में क्या मुसमलान नहीं है. वहां आतंकवादी नहीं हैं. वहां का संविधान ऐसा करने की छूट नहीं देता जैसाकि अपने देश में इनको दे रखी हैं. संविधान की धारा ३७० कश्मीर पर लागू है, वहां कोई भी व्यक्ति जमीन नहीं खरीद सकता हैं. वहां के पण्डितों की दयनीय दशा पर किसी का ध्यान नहीं, जबकि मुस्लिम वोटों के लिए यहा के लिए राजनेता उन मुस्लिमों को प्राथमिकता देते हैं और न जाने कितनी रियायतें दे रक्खी हैं. नसबन्दी कराए तो हिन्दू, मुस्लिम इससे विमुक्त है, ४ शादियां कर सकते हैं क्योंकि उनकी सरियत में लिखा है. कश्मीर में कभी हिन्दू मुख्यमंत्री नहीं बन सकता. वहां का संविधान और झण्डा भी अलग मान्यत रखता है. पृथकतावादी और पाकिस्तान परश्त लोग वहां शासन में भी सम्मिलित हैं. लिखने को बहुत है बलात्कारी कौन लेख में भी आपने बिल्कुल सच्चाई लिखी है. **वैद्य पं. रामदत्त शास्त्री,**
श्रीराम आयुर्वेद सेवा सदन, राजपथ आनन्द नगर, सीकर, राजस्थान

++

विद्वानों के विचार प्रभावी है

संपादकीय, माननीय द्विवेदी जी

वंदन. जून का अंक प्राप्त हुआ. देश में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं इसके निदान के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों-रचनाकारों के विचार प्रभावी हैं. विशेष रुप से संपादकीय में जैसा कि आपने उल्लेख किया है, इसके लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार जनता ही हैं. जिस दिन जनता भ्रष्ट लोगों को चुनना बंद कर देगी उसी दिन भ्रष्टाचार बंद हो जायेगा. **अजय चतुर्वेदी 'कक्का',** बीजपुर, सोनभद्र, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

भ्रष्टाचार विशेषांक पठनीय व मनन करने योग्य हैं.

आदरणीय बन्धु, नमस्कार

पत्रिका का मई अंक प्राप्त हुआ. भ्रष्टाचार शिरोमणि अवार्ड की संकल्पना आपकी मौलिकता है. सभी सामग्री पठनीय व अच्छी है. एक सार्थक अंक हेतु बधाई.

जून अंक भी हमेशा की तरह उत्तम है. भ्रष्टाचार विशेषांक की सामग्री पठनीय व मनन करने योग्य हैं. बधाई **डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल',**
म.न.८२, गुजरातियान, धामपुर-६१, बिजनौर, उ.प्र.

++

द्विवेदी जी, नमस्कार

मुझे तो पता ही नहीं चला ऐसी भी एक पत्रिका है जो चुपचाप अपने काम कर रही हैं. हिन्दी का प्रचार-प्रसार, काव्य गोष्ठी आदि सब कुछ के बारे में पता चला. मेरी शुभकामनाए है पत्रिका के लिए. अहिन्दी भाषी व्यक्ति को भी मंच दिया है. **चमेली जुगरान,**
डी-३१,आईएफएस अपार्टमेंट, मयूर बिहार, फेज-१, दिल्ली-६१

++

पत्रिका गागर में सागर की तरह

विगत दो वर्षो से विश्व स्नेह समाज की नियमित पाठिका हूं. यदा कदा कविता, कहानी भी इसी में प्रकाशित हुई है. आपकी पत्रिका गागर में सागर की तरह सभी विधाओं को समेटे हुए है. सारे विश्व को हिन्दी के माध्यम से स्नेह सूत्र में बांधने का भगीरथ प्रयास कर रही है. यह पत्रिका. **डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर,**
२६५/२/बी, बालको नगर, कोरबा, छ.ग.

++

सामग्री से ज्ञान में बढ़ोत्तरी हुई

आदरणीय द्विवेदीजी

लोकप्रिय पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का मई अंक प्राप्त हुआ. आरक्षण पर पार्टिया व राजनेता किस कदर रोटियां सेक कर शेषजन को किस गर्त में ढकेलते जा रहे हैं इसका पर्दाफाश कर जनता को जगाने का प्रयास किया, इसके लिए बधाई स्वीकारें. साथ ही अन्य सामग्री से ज्ञान में बढ़ोत्तरी हुई. पत्रिका की दिनों दिन उन्नति देखकर मन में प्रसन्नता होती हैं. आशा है यह पत्रिका शीघ्र ही साहित्य क्षेत्र में शीर्ष स्थान प्राप्त करेगी. **डॉ० ओमप्रकाश हयारण 'दर्द',**
३२०, सी.पी.मिशन कम्पाउण्ड, ग्वालियर रोड, झांसी, उ.प्र.

++

देश को आप जैसे जवानों की आवश्यकता है

आदरणीय द्विवदीजी! प्रणाम

देश को आप जैसे जवानों की आवश्यकता है जिनमें अनन्त शक्तियां अन्तर्निहित हैं. उन शक्तियों की झलक विश्व स्नेह समाज के सम्पादन में साफ नज़र आती है. रब से दुआ है कि आपकी संस्था/मासिकी आपके संचालन में प्रगति के मार्ग में बढ़ते हुए, सफलताओं और उपलब्धियों की प्राप्ति करें.

डॉ० वली उल्लाह खां फरोग, अजमेर, राजस्थान

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

प्रिय सम्मानित पाठको, आशा के विपरीत जून-११ अंक के भ्रष्टाचार विशेषांक पर प्रतिक्रियाएं आयी है. १५ जून से अब तक २५० पत्र आ चुके हैं. यह आपका स्नेह है. सभी पत्रों को स्थान दे पाना सम्भव नहीं हैं. मेरा यह प्रयास रहेगा कि आगे भी आपका स्नेह मिलता रहेगा. **संपादक**

पुस्तक समीक्षा

समीक्षाएं लिखना तो कोई 'मनमौजी जी' से सीखे

प्रस्तुत संग्रह 'हरियाणा हिन्दी साहित्यः एक विहंगम दृष्टिपात' विधि श्री पवन चौधरी 'मनमौजी' जी का 'एक वकील साहित्यकार की डायरी' के निबंध खंड का पहला भाग है.

जिस प्रकार की लेखनी का मैं व्यक्तिगत रूप से शौकिन हूँ वैसी लेखनी मुझे मनमौजी जी में देखने को मिली है.

इस संग्रह में हरियाणा हिन्दी साहित्य एवं पुस्तक समीक्षाएं हैं. वर्तमान परिवेश में अगर आप किसी साहित्यकार को अपनी पुस्तक की समीक्षा लिखने को कहेंगे, तो अधिकांश साहित्यकार समय की कमी का रोना रो देंगे, कुछ सीधे न कहकर आजकल करते-करते महीनों-साल गुजार देंगें. बचे-खुचे एक-दो साहित्यकार समीक्षा लिखेंगे भी तो लेखक को खुश करने के लिए ही लिखेंगें. वह समीक्षा कम, लेखक की वंदना अधिक नजर आएगी. लेकिन 'मनमौजी' जी ने अपने खास लोगों की पुस्तकों पर लिखी समीक्षाओं में भी उसके दोनों पहलुओं पर गौर किया है. जहां उसकी अच्छाईयों की प्रशंसा की है, कमियों को भी बखूबी उजागर किया है.

समीक्षा के वास्तविक मतलब को भलीभांति परिमार्जित करते हुए कैसे बखूबी से शब्दों के लर में पिरोया हैं. ऐसी सुंदर बानगी देखने व पढ़ने को कम ही मिलती है.

आज कल हर आदमी, पत्रकार, साहित्यकार, चिंतक बस यह रोना रोता है कि भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, स्वार्थ का हर जगह बोलबाला है. आज अधिकांश लेखक समाज हित/देश हित के मुद्दों/आम आदमी के मुद्दों से अपने को अलग रखने की तो मानों कसम ही खा रक्खें हैं. 'मनमौजी' जी ने ठीक ही लिखा है कि अधिकांश लेखक या तो शिक्षक हैं या कहीं न कहीं सरकार के पाले में बंधे हुए बैल की तरह हैं.

जो लेखक सरकारी घूंटे से नहीं बंधे हैं, वो भी अपनी लेखनी को उपरोक्त मुद्दों पर दबाकर ही रखते हैं. चाहे उनकी सरकारी सम्मानों के हथियाने की बाध्यता हो, या भविष्य में किसी पद के पाने की लालशा. लेकिन मुझे यह कहने में कत्तई गुरेज/संकोच नहीं हो रहा है कि 'मनमौजी' जी ने मां सरस्वती से वरदान स्वरुप प्राप्त अपनी लेखनी को उन हर मुद्दों को छुआ है जिनको छूने की आज वाकई सख्त जरुरत है.

इस संग्रह के माध्यम से आपको ऐसी तथ्यपरक जानकारी भी एक साथ मिल जाएगी जिसे पढ़ने के लिए/ढूंढने के लिए आपको कई किताबों को खगालना पड़ता. यह कहना भी सर्वोचित होगा कि शायद आपको ढूंढे से भी नहीं मिलती. 'मनमौजी' जी ने बड़े-बड़े पद पर भी अगर कुछ कहना चाहा है तो बेबाक लिखा है. देखिए, बानगी के तौर पर-

"हरियाणा साहित्य अकादमी के साहित्यिक सम्मानों के निर्णय के बारे में बिलम्ब का एक मात्र कारण माननीय मुख्मंत्री की अतिव्यस्तता, अरूचि अथवा अनिच्छा हो सकती है. शासी परिषद का उद्घाटन केवल उनके कर कमलों द्वारा अनिवार्य से तनिक अधिक है, भले ही परिषद में उनके दो वरिष्ठ मंत्री उपाध्यक्ष हैं, जो, उनकी अनुपस्थिति में, अध्यक्षता करने के लिए भली भांति सक्षम हैं. ऐसे में यदि किसी संवेदनशील दिमाग में अनायास यह राजनीतिक धौंस, धांधली का धमाल उत्पन्न होता है कि हरियाणा राज्य की

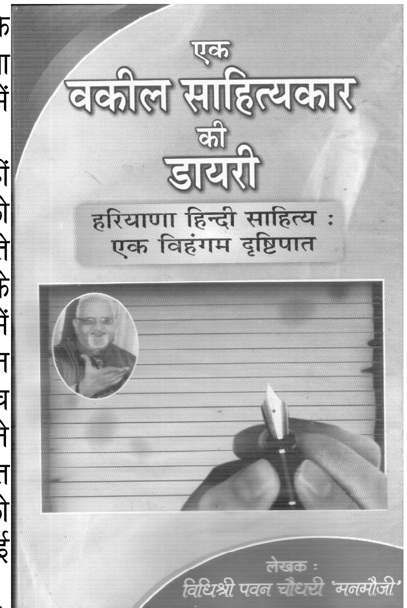

सत्ता में सिर्फ मुख्य मंत्री ही धनवान हैं, और बाकी सब कुछ कंगाल, तो भला इसमें किसी को क्या संदेह हो सकता है."

राज्यपाल भवन के बारे में लिखी गई टिप्पणी देखिए-

"क्या राज्यपाल महोदय द्वारा सरकारी एवं गैरसरकारी मिली भगत, जिसमें लूट एवं शोषण दोनों शामिल हैं, को मान्यता-प्रोत्साहन देना और इसमें स्वयं को भागीदार कहलाना, अप्रत्यक्ष ही सही, अनापेक्षित नहीं था?"

वास्तव में यह संग्रह वरिष्ठ साहित्यकारों को मनन करने को मजबूर करेगा, तो युवा साहित्यकारों को एक नयी दिशा देने, शोध के छात्रों को एक साथ पर्याप्त सामग्री देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा.

समीक्षकः डॉ०गोकुलेश्वर द्विवेदी

प्रकाशकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

मूल्यः १५१/-रुपये मात्र

पुस्तक समीक्षा

'जेल की यादें' राजनैतिक अनुभवों की डायरी

समीक्षकः केशव शरण,
वाराणसी, उ.प्र.

भगवान भोले की नगरी काशी में महापुरुषों, विद्वानों, कवियों, कलाकारों की कमी न किसी युग में थी और न आज है. यह इसकी साहित्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक समृद्धि ही है कि इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी होने का गौरव प्राप्त हैं.

इसी नगरी के एक विभूति है श्री जवाहर लाल शास्त्री, एडवोकेट. 'श्री महामृत्युन्जय महोत्सव' के आयोजक श्री शास्त्री युवावस्था से ही राजनैतिक कर्मी रहे हैं. उन्हीं दिनों अन्न वितरण में सरकारी धांधलियों को लेकर उनकी पार्टी ने 'घेराव और गोदाम लूटो और जरुरतमंदो में बांटो' के अभियान में भाग लिया. इस अभियान में भाग लेने के कारण उन्हें तीन माह जेल में बिताने पड़े थे. जेल की यादें में लेखक ने उन्हीं अनुभवों को लिपिबद्ध किया है.

११.०६.५८ से ०१.१०.५८ तक प्रतिदिन लिखी गयी यह डायरी लेखक और उसके राजनैतिक बंदी मित्रों की दिनचर्या रहन-सहन खानपान की व्यवस्था आदि का संज्ञान कराती है. यह डायरी कारावास की भयानक परिस्थिति में भी समय के रचनात्मक उपयोग के गुर और राजनैतिक विचार-दर्शन को भी रखती है, जिससे एक राजनैतिक कर्मी टूटने के बजाय स्वविकास की बेहतरी हासिल करता है. यह डायरी सत्ता के चरित्र और उसके साथ साम-दाम-दंड भेद का भी खुलासा करती है. लोकतंत्र के चुनावी विद्रूप को भी यह पुस्तक लेखक के स्वकथन में वर्णित उसके प्रथम सभासदी के चुनाव अभियान के माध्यम से बताती है. जेल डायरी संक्षिप्त है लेकिन इसके साथ लेखक का स्वकथन, आन्दोलन के दिनों में समाचार पत्र 'आज' की कटिंग, मित्र-कथनों और प्रकाशकीय में दी गयी लेखक के विषय में जानकारियां इसे एक सम्पूर्ण पुस्तक का विस्तार देती है. अपने गुरुओं और प्रेरक अंग्रजों और साथियों को भी लेखक ने भावमयता से याद किया है. पं. कामतानाथ पाण्डेय 'राजहंस', प्रो० राजाराम शास्त्री, श्री विश्वनाथ प्रसाद टण्डन, डॉ० शंभुनाथ सिंह, पद्यमविभूषण पं. किशन महाराज के सचित्र स्मृत्यांजलि दी गयी हैं. पुस्तक का एक अपना रंग है, अपना विषय और अपनी प्रस्तुति शैली है जिसमें आत्मकथा और जगत व्यथा का भी अंश है. राजनैतिक डायरी तो यह है ही. इस पुस्तक का साहित्यिक अवदान यह है कि यह आत्माभिव्यक्ति की एक सशक्त विधा डायरी को दृष्टि पटल पर लाती है जिसमें अभी बहुत कम काम हुआ है. यह पुस्तक आत्माभि व्यक्ति, इतिहास अंकन और मूल्यांकन की दृष्टि से इस विधा के महत्व का पता देती है, जिसके लिए लेखक और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं.

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत की परिस्थितियां तलाशती 'दूतिका'

समीक्षकः कृष्ण मित्र

'दूतिका' कवयित्री डॉ० तारा सिंह का १६वां काव्य संकलन है. इसके भीतर सांसारिक सुख-दुख, मानवीय भावों में उदित आशा और निराशा के अतिरिक्त प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत की तात्विक मीमांसा के दर्शन होते हैं. इसमें राष्ट्र से सम्बन्धित प्रत्येक आरोह-अवरोह को जानने-समझने का प्रयास भी यत्र-तत्र देखा जा सकता है. अपने पिताश्री और माताश्री को समर्पित यह कविता संग्रह, साहित्य मनीषियों के लिये जिज्ञासा का भाव प्रदर्शित करने में सक्षम हुआ है.

'यज्ञ समाप्ति बेल' के अवसर पर कवयित्रि ने देवाधि देव से क्षमा प्रार्थना कर पूछा है कि आखिर यज्ञ पूर्ति के अवसर पर मेरे जीवन की यज्ञ की ज्वाला से क्या अभिप्राय है? मनुष्य के पंचतत्वों में विलीन होकर भी यज्ञ की पूर्ति की कामना बनी रहती है.

'देख जग ललचा' में डॉ० तारा ने मन की आंखों में व्याप्त अंजन की सजावट का सधा हुआ स्वरुप राजा-रंक, सबल-दुर्बल सभी को आकर्षित करता है. अमर होने की मनोकामना की अभिव्यक्ति कवयित्री ने 'चाहती हूं मैं भी अमर हो जाऊं' में अत्यन्त अलंकारिक ढंग से उद्धृत की है. 'पथहीन नभ से उतर आता कोई' शीर्षक कविता में भी प्रश्नों का माया जाल बुना जा रहा हैं. कवयित्री ने चाहा है कि वह भी उस शक्ति के अनुसन्धान को अपने भौतिक चक्षुओं से नहीं अपितु आन्तरिक दृष्टि से देख सकें. 'नव आषाढ की बूंद सी' कविता में कवयित्री ने आषाढ की प्रथम जल बिन्दु का स्वरुप देखा है. उसने देखा है कि डाली पर चिड़िया की चहक से निःसृत श्वास शीतल पवन की भांति पुलकित हो रहा था.

इस प्रकार 'दूतिका' काव्य संकलन प्राकृतिक वैभव से परिपूर्ण अनेकात्मक गतिशीलता का अनूठा संगठन बन पड़ा हैं. सुधी पाठक वृन्द और साहित्य परखी व्यक्ति इस संकलन में नवीन भावनाओं के दर्शन कर सकेंगें. आवरण सुन्दर और आकर्षक हैं. मूल्य अधिक नहीं है. प्राप्ति स्थल कवयित्री का आवास.